CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राकृत एवं जैन विद्या

शोधसन्दर्भ

4658

4658

डॉ० कपूर चन्द जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

2|30

श्री गणेशवर्णी दि. संस्थान
नरिया को सादर

22. 2. 2001

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राकृत एवं जैनविद्या शोध सन्दर्भ

डॉ० कपूरचन्द जैन
अध्यक्ष—संस्कृत विभाग
श्री कुन्दकुन्द जैन महाविद्यालय
खतौली (उ०प्र०)

4658

प्रकाशक
श्री कैलाशचन्द जैन स्मृति न्यास खतौली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राकृत एवं जैनविद्या शोध-सन्दर्भ

संस्करण प्रथम १९८८ ई०

मूल्य—पचास रुपये

प्राप्ति स्थान

१- श्री कैलाशचन्द जैन स्मृति न्यास
द्वारा डा० कपूरचन्द जैन
कुन्दकुन्द जैन महाविद्यालय, खतौली—२५१२०१

२- राधा पब्लिकेशन्स ४३७८/४ बी अन्सारी रोड
दरियागंज, नई दिल्ली—११०००२

प्रकाशक— कैलाशचन्द जैन स्मृति न्यास, खतौली

मुद्रक— ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, शास्त्री मार्केट, रुड़की रोड मुजफ्फरनगर (उ०प्र०)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समर्पण

प्राकृत एवं जैनविद्या के विश्वविश्रुत विद्वान्

गुरुवर्य

स्व. पं. कैलाशचन्द्र सिद्धान्ताचार्य

को

सविनय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूमिका

आज का युग अन्वेषण का युग है। किसी समय धर्म ग्रन्थों या शास्त्रों में जो कुछ भी लिखा रहता था, पढ़ने वाला अपनी धार्मिक आस्थावश उसे ही स्वीकार कर लेता था। अब समय बदल गया है। अब मनुष्य की बुद्धि तर्क और युक्ति प्रधान अधिक हो गयी है, फलस्वरूप साहित्य के क्षेत्र में शोध और खोज को अधिक महत्त्व दिया जाने लगा हैं। इसके फलस्वरूप प्राचीन ग्रन्थों के संशोधित और परिष्कृत संस्करण प्रकाशित हुए हैं और हो रहे हैं। पुराने साहित्य के साथ नए साहित्य पर भी समीक्षात्मक ग्रन्थ प्रकाशित होने लगे हैं। भारतीय विद्या का क्षेत्र प्रमुख रूप से तीन भागों में विभाजित है— १ वैदिक २-बौद्ध तथा ३-जैन। यह निर्विवाद है कि वर्तमान उपलब्ध ग्रन्थों में संसार का सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद है। ऋग्वेद की भाषा भारोपीय परिवार की सबसे प्राचीन भाषा होने के कारण पाश्चात्य विद्वान् वेदों के अध्ययन में जुट गए और उन्होंने बड़े श्रम से वेद तथा उसकी परम्परा के ग्रन्थों के प्रामाणिक और आलोचनात्मक संस्करण निकाले। एशिया के अनेक देशों में बौद्धों की प्रधानता होने के कारण पालि और बौद्ध साहित्य पर भी बहुत कार्य हुआ। दुर्भाग्य से जैन साहित्य का जितना अध्ययन और अनुशीलन होना चाहिए, उतना नहीं हुआ। इसका सर्वप्रथम कारण तो खुद जैन ही हैं जो अपनी अमूल्य निधि को अपने ही पास सुरक्षित रखे रहे, दूसरे लोग भी इसका लाभ लें, इस ओर उन्होंने अधिक ध्यान नहीं दिया। दूसरा कारण जैनधर्म के प्रति कुछ लोगों का संकुचित दृष्टिकोण है, जिसके कारण वे इस साहित्य को साम्प्रदायिक कहकर इसकी उपेक्षा करते रहे, यहीं कारण है संस्कृत और प्राकृत में प्रचुर जैन साहित्य होते हुए भी परीक्षा पाठ्यक्रमों में (विशेषकर संस्कृत के पाठ्यक्रम में) इसकी उपेक्षा होती रही। वास्तव में किसी की तुला यदि साम्प्रदायिकता के मान पर तौलती हो, तो किसी भी परम्परा का ग्रन्थ असाम्प्रदायिक नहीं कहा जा सकता, चाहे वह वेद हो, रामायण हो या महाभारत और गीता हो; क्योंकि प्रत्येक के साथ सम्प्रदाय जुड़ा हुआ है। अतः हमें अपने दृष्टिकोण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

को बदलना चाहिए। भिन्न-२ प्रकार का साहित्य भिन्न-भिन्न विचारधाराओं को लेकर चला है। इसी में एक जैन विचारधारा भी माननी चाहिए। जब हम सभी विचारधाराओं को समान रूप से आदर देकर सबका उन्नयन करेंगे, तभी हम भारतीयता को अच्छी तरह पुष्ट कर सकते हैं।

प्रसन्नता की बात है कि हमारी सरकार का ध्यान इस ओर गया है, फलतः प्राकृत और जैनविद्या पर शोध कार्य करने वाले प्राध्यापकों और छात्रों को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों की ओर से सुविधायें दी जा रही हैं। आज आवश्यकता है, उन सुविधाओं का भरपूर उपयोग करने की और लाभ उठाने की। इन सुविधाओं से आकर्षित होकर अनेक शोध छात्र विभिन्न विश्वविद्यालयों में सुयोग्य निर्देशकों के निर्देशन में प्राकृत और जैनविद्या पर कार्य कर रहे हैं। फलस्वरूप अनेक शोधप्रबन्ध लिखे गए हैं। डॉ० कपूरचन्द जैन ने बड़ी लगन और परिश्रम से इस प्रकार में शोध प्रबन्धों की तालिका प्रस्तुत की है। उनकी तालिका में ४५२ शोध प्रबन्ध उल्लिखित हैं, यदि और अधिक प्रयास किया जाय तो इस सूची में १००, २०० की वृद्धि होना साधारण बात है। पूरी तालिका क्यों प्रस्तुत नहीं हो सकी, इसका कारण स्वयं डॉ० जैन ने बतलाया है कि प्रयत्न करने पर भी अनेक स्थानों से उन्हें कोई उत्तर ही प्राप्त नहीं हुआ। ऐसा होने पर भी डॉ० कपूरचन्द जैन का उत्साहभङ्ग नहीं हुआ और उन्होंने विषयवार वर्गीकरण कर अन्वेषकों का मार्ग सुगम बना दिया है तथा किस-किस विश्वविद्यालय से जैनविद्या और प्राकृत पर कितने शोध निबन्ध लिखे गए हैं, इसकी गणना भी की है। डॉ० जैन के कार्य से शोधार्थियों को सुविधा होगी, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है। मैं उनके इस श्रम के लिए उन्हें साधुवाद देता हूं।

१३/१२/८७

रमेशचन्द जैन
संस्कृत विभाग
वर्द्धमान कॉलिज, बिजनौर
उ० प्र०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दो शब्द

आदरणीय विद्वद्वर !

प्राकृत एवं जैनविद्या शोध-सन्दर्भ का प्रकाशन करते हुए न्यास गौरव का अनुभव कर रहा है। न्यास ने अनेक सामाजिक कार्यों के साथ जैन विद्या के क्षेत्र में सेवा करने का व्रत लिया है, प्रस्तुत प्रकाशन उसकी प्रथम कड़ी है।

इसके साथ ही न्यास ने प्राकृत एवं जैनविद्या शोध-प्रबन्ध कोष की स्थापना की है, जिसके अन्तर्गत सभी प्रकाशित/अप्रकाशित शोध-प्रबन्धों की प्रतियों/फोटो-कापियों का संग्रह किया जा रहा है। कोई भी शोधार्थी इसका सदस्य बन सकता है, उसे हर तरह की जानकारी निःशुल्क प्रदान की जायगी।

यह कार्य अन्तिम नहीं है, आपसे विनम्र अनुरोध है कि इस पुस्तक में जो त्रुटियाँ हों उनसे लेखक को अवगत कराने का कष्ट करें, अन्य कोई प्राकृत एवं जैनविद्या सम्बन्धी शोध-प्रबन्ध आपकी जानकारी में हो तो उसकी सूचना अथवा उसकी छपी प्रति ट्रस्ट को भेजने की कृपा करें। ट्रस्ट आपका आभारी रहेगा।

दिनाङ्क— २८-१२-८७

भवदीय

जयकुमार जैन ट्रस्टी
प्रवक्ता संस्कृत विभाग
एस०डी० (स्नातकोत्तर) कॉलेज
मुजफ्फरनगर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनुक्रमणिका

प्राकृत भाषा एवं साहित्य	६
अपभ्रंश भाषा एवं साहित्य	११
संस्कृत भाषा एवं साहित्य	१५
गुजराती भाषा एवं साहित्य	२१
मराठी भाषा एवं साहित्य	२१
दक्षिण भारतीय भाषायें एवं साहित्य	२१
राजस्थानी भाषा एवं साहित्य	२४
हिन्दी भाषा एवं साहित्य	२४
भाषा विज्ञान एवं व्याकरण	२८
जैनागम	३१
जैन न्याय/दर्शन	३३
जैन पुराण	३६
नीति आचार धर्म और योग	४१
इतिहास/संस्कृति/कला/पुरातत्त्व	४३
जैन-बौद्ध तुलनात्मक अध्ययन	४७
जैन-वैदिक तुलनात्मक अध्ययन	४७
जैन रामकथा साहित्य	४६
जैन विज्ञान-गणित	५१
व्यक्तित्व एवं कृतित्व	५२
समाजशास्त्र	५४
अर्थशास्त्र	५५
राजनीति	५५
शिक्षा शास्त्र	५५
मनोविज्ञान/भूगोल	५६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भारतीय संस्कृति की श्रमण विचारधारा की एक धारा जैन धर्म का समग्र प्राचीन साहित्य प्राकृत भाषा में निबद्ध है। प्राकृत के अतिरिक्त अपभ्रंश संस्कृत और हिन्दी में भी पर्याप्त जैन साहित्य लिखा गया। दक्षिण भारतीय भाषायें भी जैन साहित्य से अछूती नहीं हैं। विपुलता की दृष्टि से जैन साहित्य कम नहीं है। पर अत्यन्त खेद का विषय है कि इसे धार्मिक साहित्य कहकर मध्यकाल में इसकी उपेक्षा की गई।

प्रसन्नता का विषय है कि उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में प्राच्य और पाश्चात्य विद्वानों का ध्यान जैनागम और आगमेतर विषयों की ओर गया, फलतः अनेक गवेषणात्मक और तुलनात्मक ग्रन्थ लिखे गये। शोध-उपाधियों के लिए भी विभिन्न विश्वविद्यालयों के अन्तर्गत अनेक शोध–प्रबन्ध लिखे गये और लिखे जा रहे हैं।

खेद का विषय है कि जैन विद्याओं पर हुए शोध कार्य की कोई प्रामाणिक सूची प्रकाशित नहीं हुई इससे एक ही विषय पर अलग-अलग विश्वविद्यालयों से एकाधिक शोध–प्रवन्ध लिखे गये। इसी कारण मैंने उक्त सर्वेक्षण करने की योजना बनाई।

अपने कार्य को मूर्त रूप देने के लिए मैंने विभिन्न सूचीपत्रों तथा पत्र/पत्रिकाओं की पुरानी फाइलों को देखा, साथ ही एक प्रपत्र छपवाकर उसे ज्ञात विद्वानों के पास भेजा। दुःख का विषय है कि अधिकांश विद्वानों ने उसका उत्तर नहीं भेजा। भारतीय विश्वविद्यालय संघ द्वारा प्रकाशित शोध–प्रबन्ध–सूचियों, पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान वाराणसी तथा डा॰ पी॰ सी॰ जैन जयपुर के सूचीपत्रों, प्राप्त पूरित प्रपत्रों, विभिन्न पत्र/पत्रिकाओं में प्रकाशित प्रतिवेदनों तथा शोध-प्रबन्धसारों एवं स्वयं अनेक विश्वविद्यालयों में जाकर शोध–प्रबन्ध देखकर, उनके आधार पर हमने विषयवार प्रस्तुत सूची तैयार की है। इस सूची

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

में कुछ प्रबन्ध पी–एच. डी.; कुछ विद्यावारिधि, कुछ डी. फिल्. और कुछ डी. लिट् उपाधि के लिए लिखे गये हैं। एम. फिल्. तथा एम. ए. के एक प्रश्नपत्र के रूप में भी कुछ लघु शोध–प्रवन्ध लिखे गये हैं, जिनका सूची में यथास्थान उल्लेख कर दिया गया है, जहां कोई उल्लेख नहीं है वह पी–एच डी. उपाधि हेतु लिखा गया शोध–प्रवन्ध समझना चाहिए।

भारत में उपाधि–निरपेक्ष शोध से ही जैन विद्यायें पल्लवित हुई हैं। डा० नन्दलाल जैन ने अनेक ऐसे नाम गिनाये हैं, जिन्होंने शोध के लिए नही, अपितु स्वान्तः सुखाय जैन शोध को गति दी है।[1] इनमें श्रद्धेय श्री नाथूराम प्रेमी, श्री जुगलकिशोर मुख्तार, पं० परमानन्द शास्त्री, पं० दलसुख भाई, पं० हीरालाल जैन, पं० फूलचन्द्र सिद्धान्त शास्त्री, पं० कैलाशचन्द सिद्धान्ताचार्य, पं० वालचन्द्र जैन, मुनि कान्तिसागर, श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री, श्री अगरचन्द्र नाहटा, श्री कुन्दन लाल जैन, श्री जी० आर० जैन आदि के नाम श्रद्धा एवं विनयावली पूर्वक उल्लेखनीय हैं।

यह प्रसन्नता की बात है कि जैन विद्याओं पर अब केवल जैन शोधार्थी ही शोध नहीं कर रहे हैं, अपितु, जैसा कि आगामी सूची देखने से स्पष्ट है, बहुत बड़ी संख्या में अजैन शोधार्थियों ने जैन–विद्याओं पर कार्य किया है शोध के विषय भी बढ़े हैं। जैन दर्शन और साहित्य के अतिरिक्त प्राकृत– अपभ्रंश– संस्कृत– गुजराती– मराठी– राजस्थानी आदि भाषाओं, भाषाविज्ञान, जैनागम, जैन पुराण, इतिहास, नीति, आचार, धर्म, पुरातत्व, रामकथा, विज्ञान, समाजशास्त्र, राजनीति, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान आदि विषयों पर शोध-कार्य हुए हैं, किन्तु प्रकाशन की दृष्टि से जैन शोध की स्थिति अत्यन्त दयनीय है लगभग २५% शोध–प्रबन्ध ही प्रकाशित हो सके हैं। जैन शोध संस्थानों के साथ ही सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक संस्थाओं को भी इस विषय में आगे आना चाहिए। भाषा की दृष्टि से हिन्दी भाषा में ही अधिकांश शोध–प्रवन्ध लिखे गये हैं उसके बाद अंग्रेजी का क्रम आता है। बाद में संस्कृत, कन्नड़, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं का।

१– अनेकान्त, जनवरी–मार्च १९८७
–वीर सेवामंदिर, दरियागंज, नई दिल्ली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विभिन्न विश्वविद्यालयों में हुए शोध कार्यों की संख्या निम्न सारणी से स्पष्ट है।

क्रम सं॰	सूची में प्रयुक्त विश्वविद्यालय के लिए संक्षिप्त नाम	विश्वविद्यालय	शोध प्रबन्धों की संख्या
१-	अन्नामलई	अन्नामलई विश्वविद्यालय अन्नामलई नगर	५
२-	अलीगढ़	अलीगढ़ विश्वविद्यालय अलीगढ़	२
३-	आक्सफोर्ड	आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय लंदन	१
४-	आगरा	आगरा विश्वविद्यालय आगरा	५७
५-	इन्दौर	देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर	१४
६-	इलाहाबाद	इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद	१३
७-	उत्कल	उत्कल विश्वविद्यालय भुवनेश्वर	२
८-	उदयपुर	मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर	७
९-	उस्मानियाँ	उस्मानियाँ विश्वविद्यालय हैदराबाद	२
१०-	कलकत्ता	कलकत्ता विश्वविद्यालय कलकत्ता	६
११-	कानपुर	कानपुर विश्वविद्यालय कानपुर	२
१२-	कालीकट	कालीकट विश्वविद्यालय कालीकट	१
१३-	कुरुक्षेत्र	कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र	६
१४-	केरल	केरल विश्वविद्यालय त्रिवेन्द्रम	१
१५-	कोल्हापुर	शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर	१
१६-	गढ़वाल	गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर (उ॰प्र॰)	१
१७-	गुजरात	गुजरात विश्वविद्यालय अहमदाबाद	१७
१८-	गुरुकुल	गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार	१
१९-	गोरखपुर	गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर	१
२०-	ग्वालियर	जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर	३
२१-	जबलपुर	रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर	७
२२-	जादवपुर	जादवपुर विश्वविद्यालय कलकत्ता	१
२३-	जोधपुर	जोधपुर विश्वविद्यालय जोधपुर	३
२४-	दिल्ली	दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली	१८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५-	धारवाड़	कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड़	११
२६-	नागपुर	नागपुर विश्वविद्यालय नागपुर	७
२७-	नैनीताल	कुमाऊं विश्वविद्यालय नैनीताल	३
२८-	पटना	पटना विश्वविद्यालय पटना	८
२९-	पटियाला	पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला	१
३०-	पूना	पूना विश्वविद्यालय पूना	१०
३१-	पंजाब	पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़	३
३२-	बड़ौदा	सियाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा	१
३३-	बम्बई	बम्बई विश्वविद्यालय बम्बई	२४
३४-	बरेली	रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली	१०
३५-	बिहार	बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर	२९
३६-	बेंगलोर	बेंगलोर विश्वविद्यालय बेंगलोर	१
३७-	भागलपुर	भागलपुर विश्वविद्यालय भागलपुर	३
३८-	भोपाल	भोपाल विश्वविद्यालय भोपाल	६
३९-	मगध	मगध विश्वविद्यालय बोधगया	१७
४०-	मद्रास	मद्रास विश्वविद्यालय मद्रास	९
४१-	मदुराई	मदुराई कामराज विश्वविद्यालय मदुराई	४
४२-	मेरठ	मेरठ विश्वविद्यालय मेरठ	१५
४३-	मैसूर	मैसूर विश्वविद्यालय मैसूर	१
४४-	राजस्थान	राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर	३४
४५-	रायपुर	रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर	१
४६-	रांची	रांची विश्वविद्यालय रांची	१
४७-	रोहतक	महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक	१
४८-	लखनऊ	लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ	८
४९-	वाराणसी	कांशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी	४१
५०-	विक्रम	विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन	१५
५१-	विश्वभारती	विश्वभारती विश्वविद्यालय शान्तिनिकेतन	२
५२-	वेंकटेश्वर	वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय तिरुपति	१
५३-	सम्पूर्णानन्द	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व विद्यालय वाराणसी	३
५४-	सागर	डा० हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर	९
५५-	संस्कृत संस्थान	राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली	१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विभिन्न विषयों में हुए शोध-प्रबन्धों की संख्या निम्न प्रकार है:—

प्राकृत भाषा एवं साहित्य	२२
अपभ्रंश भाषा एवं साहित्य	४२
संस्कृत भाषा एवं साहित्य	५१
गुजराती	४
मराठी	१
दक्षिण भारतीय भाषायें	१६
राजस्थानी	६
हिन्दी भाषा एवं साहित्य	३६
भाषा विज्ञान एवं व्याकरण	२५
जैनागम	१३
जैन न्याय-दर्शन	६०
जैन-पुराण	१७
नीति आचार धर्म और योग	१७
इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व	३६
जैन-बौद्ध तुलनात्मक अध्ययन	७
जैन-वैदिक तुलनात्मक अध्ययन	६
रामकथा	२९
जैन विज्ञान गणित	५
व्यक्तित्व एवं कृतित्व	२२
समाजशास्त्र	७
अर्थशास्त्र	३
राजनीति	८
शिक्षाशास्त्र	२
मनोविज्ञान	२
भूगोल	१

देश में इस समय लगभग १५ जैन शोध संस्थान कार्यरत हैं, किन्तु चिन्ता का विषय है कि दो-तीन को छोड़कर किसी भी संस्थान में संतोषजनक कार्य नहीं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो रहा है। संस्थानों के अधिकारियों और संचालकों को चाहिए कि समूहबद्ध और समयबद्ध कार्यक्रम बनाकर इस दिशा में प्रयास करें तो जैन शोध की दशा अत्युत्तम हो सकती है। कुछ संस्थानों की सूची निम्न प्रकार है:—

१– देवकुमार जैन ओरियण्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट आरा (बिहार)
२– जैन विद्या संस्थान श्री महावीर जी (राजस्थान)
३– पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान वाराणसी
४– गणेश वर्णी शोध संस्थान वाराणसी
५– प्राकृत एवं जैन विद्या शोध संस्थान वैशाली (बिहार)
६– जैन विश्वभारती लाडनूँ (राजस्थान)
७– लालभाई दलपतभाई भारतीय सस्कृति विद्यामंदिर अहमदाबाद
८– भोगीलाल लेहरचंद भारतीय संस्कृति संस्थान पाटन एवं दिल्ली
९– श्रीमती रमा जैन शोध-संस्थान मूलबद्री (कर्नाटक)
१०– कुन्दकुन्द भारती दिल्ली
११– सेठ बख्तावर रिसर्च इंस्टीट्यूट मद्रास
१२– त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर (उ०प्र०)
१३– आचार्य विद्यासागर शोध संस्थान जबलपुर (म०प्र०)
१४– अनेकान्त शोधपीठ बाहुबलि
१५– मुनि विद्यानन्द शोध संस्थान बड़ौत (उ०प्र०)

इसके अतिरिक्त कुछ विश्वविद्यालयों में प्राकृत एवं जैनविधा के स्वतन्त्र विभाग हैं, इनमें नागपुर, मैसूर, पूना, उदयपुर, जयपुर, वाराणसी, जबलपुर, सम्पूर्णानन्द-वाराणसी, पटियाला, कर्नाटक आदि विश्वविद्यालयों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

जैसा कि हमने ऊपर बताया है कि जैन विद्या के क्षेत्र में लगभग १५ संस्थान शोध संस्थान का दम भरने वाले हैं, पर दुःख का विषय है कि किसी भी संस्थान ने शोध-संचरण का कार्य नहीं किया है। काफी वर्षों पूर्व भारतीय ज्ञानपीठ की पत्रिका यह कार्य करती थी, पर अब वह भी बन्द ही है। किसी संस्थान को चाहिए कि वह अपनी मासिक/त्रैमासिक पत्रिका में उस अवधि में हुए शोध कार्य/ पंजीकरण का विवरण प्रकाशित करे, साथ ही प्रत्येक अंक में विगत वर्षों में हुए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४–५ शोध–प्रबन्धों का सारांश भी प्रकाशित करें।

किसी संस्थान को जैन विद्या शोध प्रबन्ध संग्रहालय की भी स्थापना करनी चाहिए। ऐसा संस्थान सारे विश्वविद्यालयों से एक बार शोध–प्रबन्धों की फोटो॰ कापी प्राप्त करें, इस प्रकार एक बार सारी सामग्री एकत्रित हो जाने पर आगे होने वाले कार्यों की जानकारी भी धीरे–धीरे मिलती ही रहेगी। जैन विद्या प्रेमियों, संस्थानों और सामाजिक तथा धार्मिक नेताओं को ऐसी मानसिकता बनानी चाहिए।

अपने इस कार्य में जिन संस्थाओं और मनीषियों का सहयोग मुझे मिला है, उनके प्रति आभार व्यक्त न करना कृतघ्नता होगी। प्रथमतः मैं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का आभारी हूं, जिसने इस महत्वपूर्ण और आवश्यक सर्वेक्षण को सम्पन्न करने हेतु आर्थिक सहायता प्रदान की है।

अपने इस कार्य के दौरान मुझे सागर, जयपुर, अहमदाबाद, झांसी और भोपाल विश्वविद्यालयों में जाना पड़ा। पुस्तकालयों के अधिकारियों और कर्मचारियों ने पर्याप्त सहयोग दिया अतः उनका आभारी हूं, विशेषतः जयपुर के भाई डा॰ पी. सी. जैन, सागर के श्री सैनी जी, अहमदाबाद के श्री वाघेला, भोपाल के डा॰ वृषभ प्रसाद जी और झांसी के श्री गौतम जी का मैं विशेष आभारी हूं।

अपने श्रद्धेय गुरुओं और मित्रों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं, जिन्होंने समय–समय पर जानकारी देकर मेरा उत्साहवर्धन किया है। डा॰ नन्दलाल जी रीवां, डा॰ राजाराम जी आरा, डा॰ रमेशचन्द जैन बिजनौर, पं॰ वच्चूलाल शास्त्री कानपुर, डा॰ जयकुमार जैन मुजफ्फरनगर, डा॰ श्रेयांस जैन बड़ौत, प्रो॰ प्रवीणचन्द जी जयपुर, डा॰ कमलेश जैन वाराणसी, प्रो॰ डी. पी. गोविल एवं श्री अमनेश त्यागी खतोली से सदैव स्नेह और सहयोग मिला है इन सभी के प्रति विनयावत हूं।

अपनी सहधर्मचारिणी डा॰ ज्योति जैन के प्रति आभारी हूं जिसके सहयोग के बिना यह कार्य सम्भव नहीं था। चि॰ अनुज सुमत जैन, कु॰ कल्पना जैन एम. ए., कु॰ दीपा श्रीवास्तव एम. ए. फाईनल ने सूचीकरण और कार्डलेखन में पूरा–पूरा सहयोग दिया है। चि॰ विट्टू और अनो अपनी बालक्रीडाओं से आनन्दित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करते रहे इन सभी के मंगलमयी भविष्य के प्रति शुभाषी: ।

इस महत्त्वपूर्ण और आवश्यक सूची को इतने शीघ्र प्रकाश में लाकर आप तक पहुंचाने का कार्य कैलाशचन्द जैन स्मृति न्यास ने किया है। न्यास सामाजिक और धार्मिक कार्यों में सराहनीय कार्य कर रहा है। इसमें जो त्रुटियां हैं, वे मेरी हैं, और जो कुछ श्रेष्ठ है, वह मेरे गुरुजनों, सहयोगियों और मित्रों की शुभकामनाओं का ही फल है, आपसे आग्रह है कि इसमें जो त्रुटियाँ मिलें, उनसे मुझे अवगत कराकर कृतार्थ करें।

डॉ० कपूरचंद जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

4658

प्राकृत भाषा एवं साहित्य

१ अवदल नीति
दि स्टोरी ऑफ किंग उदयन एज ग्लेड फ्रॉम संस्कृत, पाली एण्ड प्राकृत सोर्सेज
इलाहाबाद, १९६२—अप्रकाशित (डी॰फिल्॰)

२ आचार्य कृष्ण चन्द्र
ए क्रिटिकल एडिशन ऑफ मार्कण्डेयज प्राकृत सर्वस्व,
उत्कल, १९६६ —अप्रकाशित

३ उपाध्याय रामजी
स्टडी ऑफ प्राकृत महाकाव्याज इन रिलेशन टू कगनेट संस्कृत लिट्रेचर
इलाहाबाद, १९४५—अप्रकाशित (डी॰फिल्॰)

४ के॰ कमला
एवरि डे लाईफ इन एन्सियेन्ट इण्डिया एज डिपिक्टेड इन प्राकृत लिट्रेचर
उस्मानिया, १९७८—प्रकाशित

५ घोष मनमोहन
ए स्टडी ऑफ कर्पूरमंजरी
कलकत्ता, १९८०—प्रकाशित

६ जामखेडकर अरविन्द प्रभाकर
कल्चरल स्टडी फ्राम दि वसुदेव हिण्डी
पूना, १९६५—अप्रकाशित

७ जैन कुसुमलता
लीलावई कहा के विशेष सन्दर्भ में प्राकृत कथा काव्यों का अध्ययन
इंदौर, १९७३—अप्रकाशित

८ जैन प्रेम सुमन
कुवलय माला का सांस्कृतिक अध्ययन
उदयपुर, १९७४—प्रकाशित

९ जैन शशि प्रभा
गाथा सप्तशती और बिहारी सतसई : सतसई परम्परा के परिवेश में एक तुलनात्मक अध्ययन
आगरा, १९६८—अप्रकाशित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१० जोसफ पी० एम०
प्राकृत लोन वर्कस इन मलयालय
केरल, १९८१—अप्रकाशित

११ पाठक राजकुमार
वसुदेव हिण्डी का आलोचनात्मक अध्ययन
बिहार, १९८२—प्रकाशित

१२ पाठक शोभनाथ
जैन संस्कृत प्राकृत साहित्य में महावीर कथा
विक्रम, १९७५—प्रकाशित

१३ पुष्पलता
गाथा सप्तशती तथा रीतिकालीन श्रृंगारिक सतसई काव्य का तुलनात्मक अध्ययन,
कुरुक्षेत्र, १९६९—अप्रकाशित

१४ पोद्दार रामप्रकाश
एन एस्थेटिक एनालिसिस ऑफ कर्पूरमंजरी
बिहार, १९७८—प्रकाशित

१५ भट्ट के० महालिंग
सुबंधुज वासवदत्ता एण्ड नेमिचन्द्राज लीलावती : ए कम्पेरेटिव स्टडी
मद्रास, १९८२—अप्रकाशित

१६ यादव झिनकू
समराइच्चकहा का सांस्कृतिक अध्ययन
वाराणसी, १९७३—प्रकाशित

१७ राय चन्द्र देव
ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ प्राकृत इंस्क्रिपसन्स
मगध, १९७०—अप्रकाशित

१८ राय रामजी
सेतुबन्ध का समीक्षात्मक अध्ययन
मगध, १९८२

१९ व्यास भोलाशंकर
प्राकृत पैंगलम् ए टैक्स्ट ऑन प्राकृत एण्ड अपभ्रंश मैटर्स
राजस्थान, १९५६—प्रकाशित (डी०लिट्०)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२० शास्त्री नेमिचन्द्र
हरिभद्र के प्राकृत कथा साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन
भागलपुर, १९६१—प्रकाशित

२१ सन्तोष कुमारी
कालिदास के नाटकों की प्राकृत भाषा का अध्ययन
कुरुक्षेत्र, १९७०—अप्रकाशित

२२ सूरिदेव श्रीरंजन
वसुदेव हिण्डी का आलोचनात्मक अध्ययन
विहार, १९८२—प्रकाशित

अपभ्रंश भाषा एवं साहित्य

२३ उपाध्याय नागेन्द्र नाथ
तांत्रिक बौद्ध सिद्धाचार्य कृष्ण वज्रपाद की अपभ्रंश रचनाओं का अध्ययन एवं सम्पादन
कानपुर, १९७६—(डी०लिट्०)

२४ कपूर मेहशी
पुष्पदन्त का कृष्ण और रामकाव्य
इन्दौर, अप्रकाशित

२५ काण्डरकर एम० वी०
मध्यकालोपरान्त हिन्दी जैन साहित्य का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अनुशीलन (सं० १९०१ से २०३० तक)
पूना, १९८२—अप्रकाशित

२६ कुमारी चंचल
अपभ्रंश कथा साहित्य का अध्ययन
विश्वभारती, १९६५—अप्रकाशित

२७ कोछड़ हरिवंश
अपभ्रंश साहित्य
दिल्ली, १९५२—प्रकाशित

२८ कौशिक जगदीश प्रसाद
अपभ्रंश के विकास क्रम में पश्चिमी राजस्थानी
राजस्थान, १९७०—अप्रकाशित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२९ खाव्या सुधा
जिनहर्षगणिकृत रयणसेहरीकहा का आलोचनात्मक सम्पादन एवं अध्ययन
उदयपुर, १९८३—अप्रकाशित

३० गुप्ता कमला
जंबुस्वामी चरिऊ कथावस्तु का समग्र अनुशीलन
इंदौर, १९७५

३१ जैन देवेन्द्र कुमार
अपभ्रंश साहित्य
आगरा, १९५७—प्रकाशित

३२ जैन देवेन्द्र कुमार शास्त्री
भविष्य कहा और अपभ्रंश कथाकाव्य
आगरा, १९६४—प्रकाशित

३३ जैन धन्नालाल
करकंडचरिऊ : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
इंदौर—अप्रकाशित

३४ जैन प्रेमचन्द
अपभ्रंश कथाकाव्यों का हिन्दी प्रेम काव्यों के शिल्प पर प्रभाव
वाराणसी, १९६९—प्रकाशित

३५ जैन पारसमल
अपभ्रंश जैन प्रेमाख्यान काव्य
आगरा—प्रकाशित

३६ जैन राजाराम
महाकवि रइधू के साहित्य का समालोचनात्मक अध्ययन
बिहार, १९६५—प्रकाशित

३७ जैन विमल प्रकाश
जम्बूस्वामी के जीवन चरित का समालोचनात्मक अध्ययन
जबलपुर, १९८६—प्रकाशित

३८ जैन सुरेन्द्र कुमार
पासणाहचरिउ :एक समीक्षात्मक अध्ययन
बरेली, १९८६—अप्रकाशित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३९ जैन हुकुमचन्द्र
रयणचूड़रायचरियं का आलोचनात्मक सम्पादन एवं अध्ययन
उदयपुर, १९८३—अप्रकाशित

४० टंडन कैलाशनाथ
पुष्पदन्त की भाषा
लखनऊ, १९६९—अप्रकाशित

४१ तोमर रामसिंह
प्राकृत अपभ्रंश का साहित्य और उसका हिन्दी साहित्य पर प्रभाव
इलाहाबाद, १९५१— प्रकाशित

४२ देवी सूरजमुखी (श्रीमती)
अपभ्रंश का जैनरहस्यवादी काव्य और उसका कबीर पर प्रभाव
आगरा, १९७२—अप्रकाशित

४३ पंत अंबादत्त
अपभ्रंश काव्य परम्परा और विद्यापति
आगरा, १९५८—प्रकाशित

४४ पठान डी. बी.
पुष्पदन्त एण्ड हिज वर्क्स इन अपभ्रंश
कोल्हापुर, १९८१—अप्रकाशित

४५ पाण्डे राजनारायण
महाकवि पुष्पदन्त : दशमी शताब्दी के एक अपभ्रंश कवि
आगरा, १९६३—प्रकाशित

४६ पाण्डे सिद्धनाथ
अपभ्रंश कथा साहित्य का हिन्दी कथा साहित्य पर प्रभाव (१७वीं शताब्दी तक)
इलाहाबाद, १९६९—प्रकाशित (डी०फिल्०)

४७ पाण्डेय सूर्यनारायण
चौदहवीं शताब्दी के अपभ्रंश हिन्दी साहित्य में वर्णित भारत
इलाहाबाद, १९७४—अप्रकाशित (डी०लिट्०)

४८ पाण्डेय मदन
अपभ्रंश के काव्यरूप और हिन्दी पर उनका प्रभाव
वाराणसी, १९७२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४९ वोरा विधातृ अविनाश
दी डवलपमेन्ट ऑफ लेटर अपभ्रंश लिट्रेचर इन वेस्टर्न इण्डिया
गुजरात, १९६७—अप्रकाशित

५० यादव लेखराज
भविष्यकहा और पद्मावत की कथानक रूढ़ियाँ और काव्य रूढ़ियाँ
दिल्ली, १९७६—अप्रकाशित

५१ रामकिशोर
अपभ्रंश मुक्तक काव्य का हिन्दी मुक्तक काव्य पर प्रभाव
इलाहाबाद, १९७५—अप्रकाशित

५२ राम मांधाता
सूरसागर और प्राकृत अपभ्रंश का कृष्ण साहित्य
वाराणसी, १९७३—अप्रकाशित

५३ वर्मा एन. पी.
अपभ्रंश के अस्फुट साहित्यिक मुक्तक पद
बिहार, १९६७—अप्रकाशित

५४ शर्मा ओमप्रकाश
अपभ्रंश के चरितकाव्य : एक अनुशीलन
विक्रम, १९७२—अप्रकाशित

५५ शर्मा गोवर्धनदास
प्राकृत और अपभ्रंश का डिंगल साहित्य पर प्रभाव
राजस्थान, १९६३—प्रकाशित

५६ शाह रमणीकलाल एम.
कवि साधारण विरचित अपभ्रंशभाषामय विलासवईकहा : संशोधित संस्करण तथा अध्ययन
गुजरात, १९७२—प्रकाशित

५७ श्रीवास्तव वीरेन्द्र
अपभ्रंश भाषा का अध्ययन (ध्वन्यात्मक, रूपात्मक और अर्थात्मक)
पटना, १९६४—प्रकाशित (डी०लिट्०)

५८ साध्वी साधना
अपभ्रंश जैन साहित्य एव मानव मूल्य
मेरठ, १९८२—अप्रकाशित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५९ साहा रणजीत कुमार
सिद्धों की अपभ्रंश कृतियों का अध्ययन
विश्वभारती, १९६९

६० सिंह इन्द्रपाल
अपभ्रंश साहित्य में शृंगार
लखनऊ, १९६७—अप्रकाशित (डी०लिट्०)

६१ सिंह नथुनी
अपभ्रंश और हिन्दी काव्यरूपों का तुलनात्मक अध्ययन
मगध, १९७१ - अप्रकाशित

६२ सिंह प्रमोद कुमार
अपभ्रंश के हेम मुक्तकों की अर्थयोनियाँ
बिहार, १९७१—(डी०लिट्०)

६३ सिंह वासुदेव
अपभ्रंश और हिन्दी (अठारहवीं शती तक के जैन रहस्यवाद का अध्ययन)
आगरा, १९६२—प्रकाशित

६४ सेनगुप्त मुरारी मोहन
हिस्ट्री ऑफ अपभ्रंश लेंग्वेज एण्ड लिट्रेचर
जादवपुर, १९६८—अप्रकाशित

संस्कृत भाषा एवं साहित्य

६५ अग्रवाल सुश्री पुष्पा
जैन संस्कृत महाकाव्यों (८०० से १४०८) में रस विवेचन
दिल्ली, १९७८— अप्रकाशित

६६ अग्रवाल सन्तोष
धनंजय के द्विसंधान महाकाव्य का समीक्षात्मक अध्ययन
मेरठ, १९८१—अप्रकाशित

६७ कंडपाल लता
माणिक्य देव सूरि के नलायनम् का समीक्षात्मक अध्ययन
नैनीताल, १९८२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६८ श्रीमती कमल कुमारी
संस्कृत वरांगचरित का काव्यशास्त्रीय एवं सांस्कृतिक अध्ययन
मगध, १९७८—अप्रकाशित

६९ कुन्तल श्रीमती
पुण्याश्रव कथाकोष का समीक्षात्मक अध्ययन
बरेली, १९८७

७० खरे मंजूलता
पोस्टअभिनव गुप्त ड्रेमेटिक टेक्नीक विद स्पेशियल रेफरेन्स टू दि नाट्य दर्पण ऑफ रामचन्द्र एण्ड गुणचन्द्र
लखनऊ, १९७७—अप्रकाशित

७१ गुप्त श्रीमती पुष्पा
धनपाल कृत तिलक मंजरी का समालोचनात्मक अध्ययन
जोधपुर, १९७८ —अप्रकाशित

७२ गुप्ता पुष्पा देवी
रास इन जैन संस्कृत महाकाव्याज (फ्रॉम एटिन्थ टू फिफिटीन्थ सेन्चूरी ए०डी०)
दिल्ली, १९७८—अप्रकाशित

७३ गुप्त शिवदत्त
धनञ्जय कृत द्विसन्धान महाकाव्य का तुलनात्मक अध्ययन
आगरा, १९७०—अप्रकाशित

७४ जैन उमा
कालिदास कृत मेघदूत तथा मेरुतुंगाचार्य कृत जैन मेघदूत का तुलनात्मक अध्ययन
मेरठ, १९८३—अप्रकाशित

७५ जैन कन्छेदी लाल
रूपककार हस्तिमल और उनका नाट्य साहित्य
मगध, १९७२—प्रकाशित

७६ जैन कपूर चन्द
गुरुदेव चम्पू का आलोचनात्मक परिशीलन
बरेली, १९८५—प्रकाशित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७७ जैन कमलेश कुमार
जैन आचार्यों का अलंकार शास्त्र में योगदान
वाराणसी, १९७७—प्रकाशित

७८ जैन गणेशी लाल
संस्कृत स्तोत्र साहित्य में आचार्य समन्तभद्र का योगदान
आगरा, अप्रकाशित

७९ जैन गोकुलचन्द्र
सोमदेवकृत यशस्तिलक का सांस्कृतिक अध्ययन
वाराणसी, १९६५—प्रकाशित

८० जैन जयकुमार
पार्श्वनाथ चरित का समालोचनात्मक अध्ययन
वाराणसी, १९७७—प्रकाशित

८१ जैन जयदेवी
चन्द्रप्रभचरित महाकाव्य : एक अध्ययन
आगरा—अप्रकाशित

८२ जैन जिनेन्द्र कुमार
पुरुदेवचम्पू एक समीक्षात्मक एवं सांस्कृतिक अध्ययन
आगरा, १९८६—अप्रकाशित

८३ जैन पन्नालाल
महाकवि हरिचन्द एक अनुशीलन
सागर, १९७३—प्रकाशित

८४ जैन बाबूलाल
जीवन्धर चम्पू काव्य का काव्यशास्त्रीय एवं सांस्कृतिक अध्ययन
मगध, १९८३—अप्रकाशित

८५ जैन रमेश चन्द्र
पद्मचरित और उसमें प्रतिपादित भारतीय संस्कृति
विक्रम, १९७२—प्रकाशित

८६ जैन वीरेन्द्र कुमार
तिलक मंजरी का आलोचनात्मक अध्ययन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विक्रम, १९६९—अप्रकाशित

८७ जैन शीलचन्द
वादीभसिंह सूरि और उनका काव्य
विक्रम, अप्रकाशित

८८ जैन हर्ष कुमारी
हेमचन्द्र के द्वयाश्रय महाकाव्य (कुमार पाल चरित) का सांस्कृतिक एवं साहित्यिक अध्ययन
आगरा, १९७४—अप्रकाशित

८९ जैन श्रेयांस कुमार
मेघविजयगणि के सप्तसंधान महाकाव्य का आलोचनात्मक अध्ययन
वाराणसी, १९७९—अप्रकाशित

९० त्रिवेदी के. एच.
दि नाट्य दर्पण ऑफ रामचन्द्र एण्ड गुणचन्द्र : ए क्रिटिकल स्टडी
गुजरात, १९६१—अप्रकाशित

९१ दवे पुष्पा
अमरचन्द्र सूरि कृत बालभारतम् का समीक्षात्मक अध्ययन
इंदौर, १९८३

९२ दीक्षित श्यामशंकर
१३वीं शताब्दी से १४वीं शताब्दी तक के जैन संस्कृत महाकाव्य
राजस्थान, १९६३— प्रकाशित

९३ दूबे यदुनाथ प्रसाद
मेरुतुंगाचार्य कृत प्रबन्धचिन्तामणि का समालोचनात्मक अध्ययन
इलाहाबाद, १९८३—अप्रकाशित (डी०लिट्०)

९४ नारंग सत्यपाल
ए स्टडी आफ द्वयाश्रय महाकाव्य इन संस्कृत लिट्रेचर
दिल्ली, १९६८—अप्रकाशित

९५ पटेल जे. एस.
वादीभसिंह सूरि कृत गद्यचिन्तामणि का आलोचनात्मक अध्ययन
गुजरात, १९८०—अप्रकाशित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९६ पाठक जगन्नाथ
धनपालकृत तिलक मंजरी का आलोचनात्मक अध्ययन
वाराणसी, १९७९—अप्रकाशित

९७ पाठक रामनाथ
संस्कृत नाटकों में जैन नाटककारों का योगदान
मगध, १९७०—अप्रकाशित

९८ पाराशर अशोक
हरिश्चन्द्र की कृतियों का सांस्कृतिक अध्ययन
राजस्थान, १९८३—अप्रकाशित

९९ वैनर्जी स्वप्ना
धर्मशर्माभ्युदय महाकाव्य का तुलनात्मक और समालोचनात्मक अध्ययन
इलाहाबाद, १९६८—अप्रकाशित (डी०फिल्०)

१०० मिश्र रविशंकर
कालिदासकृत मेघदूत और मेरुतुंग कृत जैन मेघदूत का साहित्यिक अध्ययन
वाराणसी, १९८३—अप्रकाशित

१०१ मुसलगांवकर विष्णु भास्कर
क्रिटिकल एण्ड कम्पेरिटिव स्टडी ऑफ संस्कृत वर्क्स ऑफ हेमचन्द्र
ग्वालियर, १९७०—अप्रकाशित

१०२ मोहन चन्द
दि सोशियल कण्डिशंस एज डिपिक्टेड इन जैन संस्कृत महाकाव्याज
दिल्ली, १९७७—अप्रकाशित

१०३ रमेश चन्द
नयचन्द्र सूरि के हम्मीर महाकाव्य का आलोचनात्मक अध्ययन
नैनीताल, १९८१—अप्रकाशित

१०४ लक्ष्मी नारायण
ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ चन्द्रप्रभचरित आफ वीरनन्दि
कुरुक्षेत्र, १९८२—अप्रकाशित

१०५ लखाण्डे कुलभूषण
जैन स्तोत्र साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विक्रम, १९६९—अप्रकाशित

१०६ वार्ष्णेय क्षमा
पद्मसुन्दरसूरिकृत पार्श्वनाथचरित महाकाव्य का सम्पादन
गुजरात, १९७६—अप्रकाशित

१०७ शर्मा कृष्णधर
ए स्टडी ऑफ द्वयाश्रय महाकाव्य ऑफ हेमचन्द्र
गोरखपुर, १९७९—अप्रकाशित

१०८ शर्मा भागवत शरण
संस्कृत गद्य साहित्य में गद्य चिन्तामणि का स्थान एवं समीक्षात्मक अध्ययन
आगरा, अप्रकाशित

१०९ शर्मा एस. के.
ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ तिलकमंजरी ऑफ धनपाल
कुरक्षेत्र, अप्रकाशित

११० शर्मा सुबोध
सकलकीर्तिकृत पार्श्वनाथचरित का साहित्यिक अध्ययन
बरेली, १९८६—अप्रकाशित

१११ शास्त्री नेमिचन्द्र
संस्कृत काव्यों के विकास में जैन कवियों का योगदान
मगध, १९६५—प्रकाशित (डी० लिट्०)

११२ शुक्ल वीरेन्द्र कुमार
नलायनम् का समीक्षात्मक अध्ययन
मेरठ, १९८४—अप्रकाशित

११३ सत्यव्रत
जैन संस्कृत महाकाव्यों का अध्ययन
राजस्थान, १९७२—अप्रकाशित

११४ सन्देसर बी. जे.
लिट्रेरी सर्कल ऑफ महामात्य वस्तुपाल एण्ड इट्स कन्ट्रीब्यूशन टू संस्कृत लिट्रेचर
गुजरात—प्रकाशित

११५ सिंह मिलाप
संस्कृत जैन चम्पू काव्यों का समीक्षात्मक अध्ययन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आगरा, १९८२

११६ सिंह लक्ष्मीश्वर प्रसाद
ए स्टडी ऑफ दि कन्सेप्ट ऑफ सेक्स इन इण्डियन थाट एण्ड जैनिज्म विद स्पेशियल रेफरेन्स टू दि मदनपराजयचरित्र
बिहार, १९८२—अप्रकाशित

११७ सुमन कुमारी
असगकृत वर्धमानचरित: एक अध्ययन
मेरठ, १९८७—अप्रकाशित

गुजराती भाषा एवं साहित्य

११८ दवे वसन्तराय वच्चूभाई
कवि समयसुन्दरनी साहित्योपासना
गुजरात, अप्रकाशित

११९ दवे मीनाक्षी
रामचन्द्रना नाटको : एक अध्ययन
गुजरात, १९७८—अप्रकाशित

१२० पटेल पी० जी०
संस्कृत रूपककथाओं अने महोपाध्याययशोविजयजीनु प्रदान : एक समीक्षात्मक अध्ययन
गुजरात, १९७९—अप्रकाशित

१२१ पाण्डेय एच० यू०
जैन सम्मत घनचन्द्र विशेषतहमयागिरिकृतनन्दीटीकान अधारे
गुजरात, १९७९—अप्रकाशित

मराठी–भाषा एवं साहित्य

१२२ अकोले रायप्पा टिप्पण
प्राचीन मराठी तिल जैन साहित्य भण्डार
पूना, १९६४—अप्रकाशित

दक्षिण भारतीय भाषाऐं एवं साहित्य

१२३ अरुणाचलम् के० पी०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ दि डिफरेन्सेज इन दि कमेन्ट्रिज ऑफ तोलकापियम विद स्पेशियल रेफरेन्स टू अक्थीनाई ईयल एण्ड पुराथिनाई ईयल
मद्रास, १९७७—अप्रकाशित

१२४ उमर जी वरदराज रामाचार्य
दि इन्फलुयेन्स ऑफ संस्कृत डाईरेक्टली आर थ्रू प्राकृत ऑन कन्नड़
बम्बई, १९५२—प्रकाशित

१२५ उमा देवी
पोन्न एण्ड हिज शान्ति पुराण
धारवाड़—अप्रकाशित

१२६ कण्डा स्वामी टी
ए स्टडी ऑफ वारफेयर अप टू दि पीरियड ऑफ सिलपट्टिकम्
मद्रास, १९८१—अप्रकाशित

१२७ कण्डा स्वामी एस० एन०
बुद्धिज्म एज एक्सपाउंडिड इन मनिमेखलाई
अन्नामलई, १९७१—अप्रकाशित

१२८ कलवर्गी एम० एम०
कन्नड़ लिट्रेचर इन दि नेबरहुड ऑफ कवि राजमार्ग
धारवाड़, १९७०—अप्रकाशित

१२९ कासिराजन आर
इवोल्युशन एण्ड इवोल्युशन ऑफ एपिक लिट्रेचर इन तमिल विद स्पेशियल रेफरेन्स टू सिलाप्पत्तिकम
मद्रास, १९७७—अप्रकाशित

१३० जयचन्द्र एम० ए०
प्राचीन कन्नड़ जैन साहित्य दल्ली जनपद कथेंगल्यूनड अध्ययन
बेंगलोर, १९८७

१३१ जियारमन, एन० वी०
प्रोसोडी ऑफ सिलाप्पत्तिकम
अन्नामलई, १९७६—अप्रकाशित

१३२ थारानी टी० के०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इमेजिनेशन इन दि थ्री ग्रेट एपिक्स सिल्यु, मेनिमेखलाई एण्ड चिंतामणि
मद्रास, १६८० — अप्रकाशित

१३३ नन्नन एम०
ए स्टडी ऑफ पैरासियरर्स कमेन्ट्री ऑन तोलाकापियम्
अन्नामलई, १६७६—अप्रकाशित

१३४ एन० वी० जयरमण
प्रोस्डी इन सिलाप्पत्तिकम
अन्नामलई, १६७६—अप्रकाशित

१३५ परिमनम ए० एम०
क्रिटिकल स्टडीज इन तेवरम ऑफ अप्पार
मदुराई, १६७४—अप्रकाशित

१३६ भल्ला विनीता
शिल्पदीकारम और पद्मावत
दिल्ली, १६७४—अप्रकाशित

१३७ माथुस्वामी ई० एस०
तमिल कल्चर रिवियेल्ड इन तिरुकुरल
मद्रास, १६८१—अप्रकाशित

१३८ मैनियन टी
तोलाकाप्पियम् तिरुकुरल्लुम् ओर ओप्पायू : ए कम्पेरिटिव स्टडी ऑफ तोलाकाप्पियम् एण्ड तिरुकुरल्लुम् लिट्रेरी क्रिटिसिज्म
मद्रास, १६७८—अप्रकाशित

१३९ रामचन्द्रन जी०
तिरुवल्लुवर एण्ड ह्यूमनिज्म
मद्रास, १६७८—अप्रकाशित

१४० लक्ष्मण स्वामी के
एपिक ट्रेडिशन इन सिलाप्पत्तिकम एण्ड मनिमेखलाई
अन्नामलई, १६७६—अप्रकाशित

१४१ सिन्हा अतुलनाथ
एन एनालिटिकल स्टडी ऑफ नितीपकरण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विहार, १९६६—अप्रकाशित

राजस्थानी भाषा एवं साहित्य

१४२ जैन जगवीर किशोर
जैन रास साहित्य
आगरा—अप्रकाशित

१४३ पारीख श्रीमती
राजस्थानी फाग साहित्य और उसका सांस्कृतिक महत्व
राजस्थान—अप्रकाशित

१४४ पुरोहित बद्रीनारायण (ब्रज नारायण)
तेरापंथी जैन श्वेताम्बर सम्प्रदाय का राजस्थानी और हिन्दी साहित्य
राजस्थान, १९७०—अप्रकाशित

१४५ भानावत नरेन्द्र
राजस्थानी वेलि साहित्य
राजस्थान, १९६५—प्रकाशित

१४६ रंगाटिया सनतकुमार चुन्नीलाल
जैन रास साहित्य : १५वीं शती तक
गुजरात, १९६३

१४७ शर्मा वसन्तलाल
अठारहवीं शताब्दी का राजस्थानी जैन साहित्य
राजस्थान, १९६८

हिन्दी भाषा एवं साहित्य

१४८ कुलकर्णी जी० पी०
समयसुन्दर की प्रेमगाथायें : एक अनुशीलन
पूना, १९७४

१४९ कोटिया महावीर प्रसाद
हिन्दी जैन साहित्य में कृष्ण
राजस्थान, १९८१—प्रकाशित

१५० कोठारी यू० बी०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन तीर्थंकर नेमिनाथ विषयक हिन्दी काव्य
पूना, १९७४—अप्रकाशित

१५१ खेमचन्द्र
हिन्दी जैन कथा साहित्य : एक सांस्कृतिक अध्ययन
आगरा, १९७४

१५२ चेल्लेर जनार्दन राव
वृन्द और उनका साहित्य (डी०लिट्०)
वेंकटेश्वर, १९७३

१५३ जैन अरुणलता
हिन्दी जैन काव्य में व्यवहृत दार्शनिक शब्दावली और उसकी अर्थव्यंजना
आगरा, १९७७

१५४ जैन कु० इन्दूराई
आधुनिक हिन्दी जैन महाकाव्य
लखनऊ, १९८२—अप्रकाशित

१५५ जैन किरण
रीतिकालीन हिन्दी जैन काव्य
जबलपुर, १९७४—अप्रकाशित

१५६ जैन गोकुल प्रसाद
हिन्दी जैन पद साहित्य १५वीं शताब्दी के प्रारम्भ से आधुनिक काव्य पर्यन्त
आगरा—अप्रकाशित

१५७ जैन चन्द्रवीर
अष्टछाप के कवियों की बिम्ब योजना
आगरा, १९७४—अप्रकाशित

१५८ जैन देवेन्द्र कुमार
हिन्दी भाषा और साहित्य पर जैन अपभ्रंश साहित्य का प्रभाव
अलीगढ़, १९६१

१५९ जैन धन्यकुमार
छठी से आठवीं शताब्दी के हिन्दी जैन लेखक
आगरा—अप्रकाशित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६० जैन धन्य कुमार
प्राचीन हिन्दी साहित्य पर जैन साहित्य का प्रभाव
अलीगढ़, १९६१

१६१ जैन पवन कुमार
महावीर वाणी के आलोक में हिन्दी का सन्त काव्य
मेरठ, १९८४—अप्रकाशित (डी॰लिट् के लिए)

१६२ जैन प्रकाशचन्द्र
हिन्दी के जैन विलास काव्यों का उद्भव और विकास
इन्दौर, १९७२—अप्रकाशित

१६३ जैन प्रेमसागर
हिन्दी के भक्तिकाव्य में जैन साहित्यिकों का योगदान
आगरा, १९५९—प्रकाशित

१६४ जैन पुष्पलता
मध्यकालीन हिन्दी जैन काव्य में रहस्यवाद
नागपुर, १९७५ – प्रकाशित

१६५ जैन फूलचन्द
हिन्दी में जैन कथा साहित्य
आगरा—अप्रकाशित

१६६ जैन लालचन्द
जैन कवियों के व्रजभाषा प्रवन्ध काव्यों का अध्ययन
राजस्थान, १९६८—अप्रकाशित

१६७ जैन लालचन्द्र
रीतिकालीन कवियों के हिन्दी प्रबन्ध काव्य
आगरा—अप्रकाशित

१६८ जैन सुनीता
संस्कृत, प्राकृत एवं अपभ्रंश भक्तिकाव्य परम्परा में जैन कवियों का हिन्दी पद साहित्य : एक समालोचनात्मक अध्ययन
बिहार, १९८३ —अप्रकाशित

१६९ प्रचंडिया आदित्य
जैन कवियों के हिन्दी पूजा साहित्य का साहित्यिक अध्ययन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आगरा, १९७८

१७० प्रचंडिया महेन्द्र सागर
हिन्दी बारहमासा साहित्य
आगरा, १९८२—अप्रकाशित

१७१ प्रचंडिया महेन्द्र सागर
जैन कवियों के हिन्दी काव्य का काव्यशास्त्रीय मूल्यांकन
(१५वीं शती से १९वीं तक) (डी०लिट्०)

१७२ बज कुमारी स्नेहलता
हिन्दी के मध्ययुगीन जैन प्रेमाख्यान काव्य
राजस्थान, १९८०—अप्रकाशित

१७३ मिश्र भगवती प्रसाद
जैन दोहा काव्य : एक अध्ययन
बम्बई, १९७०—अप्रकाशित

१७४ मिश्र विद्यानाथ
प्राचीन हिन्दी काव्य में अहिंसा के तत्व
बिहार, १९६३—अप्रकाशित

१७५ मुलखराज
पंजाब के हिन्दी जैन काव्यों का सर्वांगीण अध्ययन और मूल्यांकन
पंजाब, १९८१—अप्रकाशित

१७६ मेहता मंगल प्रकाश
हिन्दी साहित्य को जैन कवियों का योगदान
वाराणसी, १९८२—अप्रकाशित

१७७ लवानिया चन्द्र प्रभ
मध्ययुगीन जैन हिन्दी महाकाव्य
मेरठ, १९८२—अप्रकाशित

१७८ वार्ष्णेय कृष्णा कुमारी
हिन्दी का जैन पूजा साहित्य
आगरा—अप्रकाशित

१७९ वैश्य रुक्मिणी (श्रीमती)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुशललाभ कृत कथा साहित्य का लोकतात्विक अध्ययन
राजस्थान, १९७३—प्रकाशित

१८० शर्मा चन्द्रपाल
हिन्दी गद्य साहित्य को जैन लेखकों की देन
आगरा—अप्रकाशित

१८१ शर्मा मदनगोपाल
साध्व के पद्युम्नचरित्र के विशेष सन्दर्भ में प्रद्युम्न चरित काव्य का तुलनात्मक और आलोचनात्मक अध्ययन
राजस्थान, १९६९—प्रकाशित

१८२ शर्मा हरीशंकर (हरीश)
आदिकाल का हिन्दी जैन साहित्य
इलाहाबाद, १९५९—प्रकाशित

१८३ शुक्ल हरिप्रसाद
सत्रहवीं और अठारहवीं शती के जैन गुर्जर कवियों की हिन्दी कविता
गुजरात, १९६९—प्रकाशित

१८४ सक्सेना सुरेश चन्द
कविवर वृन्द और उनके वंशजों की हिन्दी काव्यशास्त्र को देन
राजस्थान, १९७०

१८५ सिंह गदाधर
मध्यकालीन हिन्दी जैन साहित्य का अध्ययन
मगध, १९७१

१८६ सेठ रविन्द्र कुमार
तिरूवल्लूर और कबीर का तुलनात्मक अध्ययन
दिल्ली, १९७२—अप्रकाशित

भाषाविज्ञान-व्याकरण

१८७ उनीयाल गार्गी देवी
क्रिटिकल स्टडी ऑफ प्राकृत लेंग्वेज इन संस्कृत ड्रामाज
पूना, १९६५—अप्रकाशित

१८८ एथीथन ए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दी ग्रामर ऑफ तालाकपियम् एण्ड दी लेंग्वेज ऑफ पथिनेनकिलक्कनकु : ए कम्पेरेटिव स्टडी
मदुराई, १९७९—अप्रकाशित

१८९ गुहा ठकुलंगर्जी
ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ दि प्राकृत लेंग्वेज इन संस्कृत ड्रामाज
पूना, अप्रकाशित

१९० चतुर्वेदी सुकुमारी
सिद्धहेम शब्दानुशासनगत अपभ्रंश का समग्र अनुशीलन और उसका हिन्दी पर प्रभाव
विक्रम, १९७५

१९१ जैन मुद्रिका
स्टडी ऑफ हेमचन्द्राज शब्दानुशासन
गुजरात—अप्रकाशित

१९२ टेगोर गणेश वासुदेव
हिस्टोरिकल ग्रामर ऑफ अपभ्रंश
बम्बई, १९४६—प्रकाशित

१९३ त्रिपाठी राजाराम
संस्कृत नाटकों में प्रयुक्त प्राकृत का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन
भोपाल—अप्रकाशित

१९४ तेलंग भालचन्द्र राव
भारतीय आर्य भाषा परिवार कीं मध्यवर्तिनी देश भाषाओं की धारायें
नागपुर, १९५७—अप्रकाशित

१९५ नटराजन टी०
दि लेंग्वेज ऑफ संगम लिट्रेचर एण्ड टोलकापियम
मदुराई, १९७६—अप्रकाशित

१९६ पाठक रामबरन
स्वयम्भू की भाषा
लखनऊ, १९७४

१९७ प्रभा कुमारी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कन्ट्रीब्यूशन ऑफ जैनाज टू संस्कृत ग्रामर
दिल्ली, १९८२

१९८ वैनर्जी सत्यरंजन
दि ईस्टर्न स्कूल ऑफ प्राकृत ग्रेमरियन्स
कलकत्ता, १९६४—अप्रकाशित

१९९ महेमुदले मधुकर अनन्त
हिस्टोरिकल ग्रामर ऑफ इन्सक्रिप्शनल प्राकृत्स
बम्बई, १९४३—अप्रकाशित

२०० मिश्र परम
हेमचन्द्र के अपभ्रंश सूत्रों की पृष्ठभूमि और उनका भाषा वैज्ञानिक अध्ययन
बिहार, १९६०

२०१ मिश्र राधाकान्त
लिंग्विस्टिक स्टडी ऑफ ईस्टर्न अपभ्रंश विद स्पेशल रेफरेन्स टू दी लेंग्वेज ऑफ सिद्धा
उत्कल, १९८१

२०२ मिश्र विधाता
हिन्दी सन्दर्भ में प्राकृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन
पटना, १९६५—अप्रकाशित

२०३ मिश्र सुभाष चन्द्र
अपभ्रंश एवं हिन्दी की संधिकालीन कृतियों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन
जबलपुर, १९७१

२०४ मिश्र हर्षनाथ
ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ चन्द्र व्याकरण वृत्ति ऑन दि बेसिस ऑफ ए न्यू मेनस्क्रिप्ट
दिल्ली, १९७२—अप्रकाशित

२०५ मुद्गल नित्यानन्द
शौरसैनी अपभ्रंश और पश्चिमी हिन्दी की उत्पत्ति
आगरा, १९७२

२०६ रस्तोगी एन० एल०
वररुचिकृत प्राकृत प्रकाश का आलोचनात्मक एवं सामाजिक अध्ययन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लखनऊ, १९७८—अप्रकाशित

२०७ शर्मा शिवमूर्ति
हेमचन्द्र की देशीनाममाला का आलोचनात्मक अध्ययन
इलाहाबाद, १९७३ – अप्रकाशित (डी॰फिल्)

२०८ शास्त्री परममित्र
हेमचन्द्र के अपभ्रंश सूत्रों की पृष्ठभूमि और उनकी भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन
बिहार, १९६५—अप्रकाशित

२०९ शास्त्री महेन्द्रपाल
हेमचन्द्र और पाणिनि का तुलनात्मक अध्ययन
दिल्ली, १९८२—अप्रकाशित

२१० सिंघल श्रमवीर
प्राकृत पउमचरियं और रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन
मेरठ, १९८१—अप्रकाशित

२११ सिंह रामपति
क्रिटिकल एण्ड लिंग्विस्टिक स्टडी ऑफ दि प्राकृत प्रकाश
पटना, १९७९—अप्रकाशित

जैन-आगम

२१२ कोठारी रामचन्द्र
उपासकदशांगसूत्र का आलोचनात्मक अध्ययन
उदयपुर, १९८५—अप्रकाशित

२१३ जैन परमेष्ठीदास
आचारांगसूत्र का आलोचनात्मक अध्ययन
सागर, १९६०—अप्रकाशित

२१४ जैन रमेशचन्द्र
अर्धमागधी उपांग साहित्य का समालोचनात्मक अध्ययन
जबलपुर—अप्रकाशित

२१५ जैन वीना
ए स्टडी ऑफ जैना एथिकल आइडियाज विद स्पेशियल रेफरेन्स टू आचा-
रांग सूत्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिल्ली, १९७७—अप्रकाशित

२१६ जैन सुदर्शन लाल
उत्तराध्ययन सूत्र का समालोचनात्मक अध्ययन
वाराणसी, १९६८—प्रकाशित

२१७ जैन हरीन्द्र भूषण
जैनागम के अनुसार मानव व्यक्तित्व का विकास
सागर, १९५७—प्रकाशित

२१८ शर्मा ए० एस० डी०
आगम साहित्य में जैनाचार
वाराणसी, १९६९—अप्रकाशित

२१९ शर्मा जगदीश नारायण
निर्युक्ति, चूर्णि और टीका के आधार पर आचारांग का परिशीलनात्मक अध्ययन
बिहार, १९७४—अप्रकाशित

२२० शास्त्री ईश्वरचन्द्र
ऐपिस्टिमोलोजी ऑफ दि जैन आगम्स
वाराणसी, १९५२—अप्रकाशित

२२१ शाह सुमन प्रवीणचन्द्र
थ्यारी ऑफ कर्म इन जैनागम्स
बम्बई, १९८२— अप्रकाशित

२२२ संघवे एच० पी०
विशेषावश्यकभाष्य का दार्शनिक अध्ययन
वाराणसी, १९७३—अप्रकाशित

२२३ सिकदार जे० सी०
स्टडीज इन भगवती सूत्र
बिहार, १९६०—प्रकाशित

२२४ सेन मधू
ए कल्चरल स्टडी ऑफ दि निशीथ चूर्णि
वाराणसी, १९६९—प्रकाशित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन दर्शन/न्याय

२२५ आत्रे एस० वी०
महावीर दर्शन का आलोचनात्मक अध्ययन
पूना, १९८३

२२६ उपाध्याय शान्तिलाल छगनलाल
जैना आईक्नोग्रेफी मेनली इन श्वेताम्बर
बम्बई, १९४९—प्रकाशित

२२७ कोठिया दरबारी लाल
जैन तर्कशास्त्र में अनुमान विचार
वाराणसी, १९६८—प्रकाशित

२२८ गांग सुषमा
आचार्य कुन्द कुन्द के प्रमुख ग्रन्थों में दार्शनिक दृष्टि
दिल्ली, १९७८—प्रकाशित

२२९ चौधरी विश्वनाथ
कुन्द कुन्द कृत नाटक
बिहार, १९८३—अप्रकाशित

२३० जैन श्रीमती अमरा
ए कम्पेरिटिव स्टडी ऑफ दि मेजर कमेण्ट्रिज ऑफ दि तत्वार्थ सूत्र बाई उमास्वाति, पूज्यपाद, हरिभद्र, सिद्धसेन, भट्ट अकलक एण्ड विद्यानन्द
दिल्ली, १९७४—अप्रकाशित

२३१ जैन अशोक कुमार
जैन दर्शन में अनेकान्तवाद : एक परिशीलन
गढ़वाल, १९८६

२३२ जैन आशा कुमारी
जैन न्याय तथा आधुनिक बहुपक्षीय तर्कशास्त्र
इलाहाबाद, १९७९—अप्रकाशित (डी०फिल्)

२३३ जैन इन्द्रजीत
आचार्य उमास्वाति का भारतीय दर्शन को योगदान
ग्वालियर, १९७४—अप्रकाशित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३४ जैन उदयचन्द्र
जैन तत्वमीमांसा : एक तुलनात्मक अध्ययन
आगरा—अप्रकाशित

२३५ जैन नरेन्द्र कुमार
जैन दर्शन में रत्नत्रय का स्वरूप
बरेली, १९८७

२३६ जैन नरेन्द्र कुमार
आचार्य समन्तभद्र के दार्शनिक विचारों का समालोचनात्मक अध्ययन
वाराणसी, १९८०—अप्रकाशित

२३७ जैन प्रद्युम्न कुमार
आचार्य कुन्दकुन्द का दर्शन
आगरा, १९६३—अप्रकाशित

२३८ जैन प्रद्युम्न कुमार
जैन एवं हिन्दू तर्कशास्त्र
वाराणसी, १९५७

२३९ जैन पी० के०
मेटाफिजीकल सिन्थीसिस इट्स नेचर एण्ड वैल्यू एज सजस्टेड बाई ए स्टडी ऑफ दि फिलोसफी ऑफ कुन्दकुन्द
आगरा, १९६३—अप्रकाशित

२४० जैन मन्जू
जैन माइथोलॉजी एज डिपिक्टेड इन दिगम्बर लिट्रेचर
दिल्ली, १९७६—अप्रकाशित

२४१ जैन महीपाल
जैन दर्शन में कर्मवाद : एक तुलनात्मक तथा समीक्षात्मक अध्ययन
आगरा, १९७८—अप्रकाशित

२४२ जैन महेन्द्र कुमार
सिद्धिविनिश्चयटीका का समालोचनात्मक सम्पादन
वाराणसी, १९५९—प्रकाशित

२४३ जैन रतन चन्द्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन दर्शन में निश्चय और व्यवहार नय
भोपाल, १९८०—अप्रकाशित

२४४ जैन कुमारी राका
जैन परम्परा में स्वामी समन्तभद्राचार्य का योगदान
कानपुर—अप्रकाशित

२४५ जैन लालचन्द्र
जैन दर्शन में आत्म विचार : तुलनात्मक और समीक्षात्मक अध्ययन
वाराणसी, १९७९—अप्रकाशित

२४६ जैन शान्ति
जैन माइस्टिज्म
उदयपुर, १९७४—अप्रकाशित

२४७ जैन शीतल चन्द्र
विद्यानन्दस्य दर्शनम् : एकाध्ययनम्
सम्पूर्णानन्द, १९८०—अप्रकाशित

२४८ जैन सनमत कुमार
पूज्यपाद कृत सर्वार्थसिद्धि का समालोचनात्मक अध्ययन
कुरुक्षेत्र, १९८१—अप्रकाशित

२४९ जैन सुखनन्दन
जैन दर्शन में नयवाद
मेरठ, १९७७—अप्रकाशित

२५० जैन सुमति चन्द्र
दी स्ट्रक्चर एण्ड फंक्सन्स ऑफ दी सोल इन जैनिज्म
आगरा, १९६०—प्रकाशित

२५१ टांटिया नथमल
सम फण्डामेन्टल प्रोब्लम्स ऑफ जैना फिलॉसफी
कलकत्ता, १९५१—प्रकाशित

२५२ दवे पिनाकी प्रसाद नटवरलाल
सिद्धसेन दिवाकर : ए स्टडी विद स्पेशियल रेफरेन्स टू हिज सन्मतितर्क
बम्बई, १९६३—अप्रकाशित

२५३ एन० वसुपाल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दि नेचर ऑफ सेल्फ इन जैना फिलासफी, ए कम्पेरिटिव स्टडी
धारवाड़, १६८१—अप्रकाशित

२५४ पटेरिया मुक्ताप्रसाद
जैनदर्शने आत्मद्रव्यविवेचनम्
सम्पूर्णानन्द, १६६६—अप्रकाशित

२५५ पटेल शान्तिलाल मगनलाल
फिलोसफी ऑफ श्रीमद्रामचन्द्र
बड़ौदा, १६६६—अप्रकाशित

२५६ पदमरजियाह वाई० जे०
जैन थ्योरी ऑफ रियलिटी एण्ड नालेज
आक्सफोर्ड, १६५५—प्रकाशित

२५७ पाठक इन्द्रदेव
जैन दर्शन का नयवाद
बिहार, १६८१—अप्रकाशित

२५८ पाण्डे व्रजकिशोर
जैन दर्शन के सन्दर्भ में आचार्य समन्तभद्र के आचार सिद्धान्त का समीक्षात्मक अध्ययन
मगध, १६७७—अप्रकाशित

२५६ पाण्डे रावृक्ष
धर्मकीर्ति प्रमाण्यवादपरीक्षा
बिहार, १६७४

२६० पाण्डे हरनारायण
क्रिटिकल स्टडी ऑफ अर्लि जैना थ्योरी ऑफ नॉलेज एज फाउण्ड इन कम० आन नन्दिवाई मयगिरि
गुजरात, १६७६—अप्रकाशित

२६१ बोथरा पुष्पा
दि जैना थ्योरी ऑफ प्रिसेप्शन
कलकत्ता, १६७०—प्रकाशित

२६२ बोनड़ एस० एस०
नयसेन एण्ड हिज वर्क्स

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धारवाड़ --अप्रकाशित

२६३ भट्टाचार्य हरिसत्य
रियल्स इन दि जैन मेटाफिजिक्स
कलकत्ता, १९४७ — प्रकाशित

२६४ मलिक जगदीश नारायण
इन्फलूयेन्स ऑफ जैनिज्म ऑन सर्वोदय फिलॉसफी
बिहार, १९६६—अप्रकाशित

२६५ यादव बी० आर०
जैन तर्कशास्त्र के सात तत्वों का विधान और उनकी आधुनिक व्याख्या
वाराणसी, १९८३

२६६ यादव ललिता देवी
भारतीय दर्शनों में नास्तिकता : चार्वाक, बौद्ध, जैन तथा मीमांसा दर्शन के विशेष सम्बन्ध में
पटना, १९७९—अप्रकाशित

२६७ रामजीसिंह
जैन कॉन्सेप्ट ऑफ ओमनिसाईन्स
भागलपुर, १९६६—प्रकाशित

२६८ रायनाडे बी०वी०
ए क्रिटिकल एण्ड कम्पेरिटिव स्टडी ऑफ दि जैना कान्सेप्शन आफ मोक्ष
वाराणसी, १९५८—अप्रकाशित

२६९ लोढा कंचन
जैन दर्शन में स्याद्वाद एक समालोचनात्मक अध्ययन
जोधपुर, १९७९—अप्रकाशित

२७० वर्मा एच० पी०
एन एप्राईजल ऑफ जैनिज्म इन माडर्न प्रेसपेक्टिव विद स्पेशियल रेफरेन्स टू दि फिलॉसफी ऑफ लार्ड महावीर
बिहार, १९७८—अप्रकाशित

२७१ विजय लक्ष्मी
दि कॉन्सेप्ट आफ सब्सटेन्स इन जैना थाट
जोधपुर, १९७९—अप्रकाशित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७२ शास्त्री छगनलाल
आचार्य भिक्षु और जैन दर्शन को उनकी देन
बिहार, १९६८—अप्रकाशित

२७३ शास्त्री दामोदर
भारतीयदर्शनपरम्परायां जैनदर्शनाभिमतं देवतत्वम्
संस्कृत संस्थान १९७६—प्रकाशित

२७४ शास्त्री लाल बहादुर
आचार्य कुन्दकुन्द और उनका समयसार
आगरा, १९६५—प्रकाशित

२७५ शाह उमाकान्त परमानन्द
एलिमेन्ट्स आफ जैन आईक्नोग्रेफी
बम्बई, १९५३—प्रकाशित

२७६ शाह नगींनदास जीवन लाल
धर्मकीर्ति एण्ड अकलंक : ए स्टडी आफ फारमर बाई दि लेटर
गुजरात, १९६५—प्रकाशित

२७७ श्रीमाल सुश्री पूर्णिमा
प्रशमरति और उमास्वाति का एक समीक्षात्मक वैज्ञानिक अध्ययन
राजस्थान, १९८०—अप्रकाशित

२७८ साध्वी दिव्यप्रभा
"अरिहन्त" विचार का तुलनात्मक अध्ययन
विक्रम, १९८३

२७९ साध्वी धर्मशीला
संस्कृत जैन साहित्य में उल्लिखित जैन नव तत्व
पूना, १९७८—अप्रकाशित

२८० साध्वी श्री सुरेखाजी
जैन दर्शन में सम्यक्त्व का स्वरूप
राजस्थान, १९८५—अप्रकाशित

२८१ सिकदार जे० सी०
डाक्ट्रेन आफ मेटर इन जैनिज्म
जबलपुर, १९६८—प्रकाशित (डी०लिट्)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२८२ सिंघई श्रीयांश कुमार
जैनदर्शने मुक्तिमार्गं :
राजस्थान, १९८२—प्रकाशित

२८३ सूजूक ओहिरा
ए स्टडी आफ तत्वार्थसूत्र विद भाष्य
गुजरात—प्रकाशित

२८४ सोगाणी कमल चन्द्र
एथिकल डॉक्टेन्स इन जैनिज्म
राजस्थान, १९६१—प्रकाशित

जैन–पुराण

२८५ जैन उदय चन्द
आदिपुराण में प्रतिपादित तत्व मीमांसा
इंदौर, १९७८—अप्रकाशित

२८६ जैन कुन्दन लाल
हेमचन्द्राचार्य कृत त्रिषष्टिशलाका महापुराण का तुलनात्मक तथा आलोचनात्मक अध्ययन
आगरा—अप्रकाशित

२८७ जैन नरेन्द्र कुमार (विद्यार्थी)
आचार्य जिनसेनकृत महापुराण के आधार पर ऋषभ तथा भरत के जीवन चरित्रों का तुलनात्मक अध्ययन
सागर, १९६६—अप्रकाशित

२८८ जैन प्रेमचन्द
हरिवंश पुराण का सांस्कृतिक अध्ययन
राजस्थान, १९७६—प्रकाशित

२८९ जैन रुक्मणी
हरिवंशपुराण का सांस्कृतिक अध्ययन
रायपुर, १९७७—अप्रकाशित

२९० जैन लक्ष्मी
जैन हरिवंश पुराण का सांस्कृतिक अध्ययन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सागर, १९७८—अप्रकाशित

२९१ जैन वृद्धिचन्द्र
हरिवंश पुराण का सांस्कृतिक अध्ययन
इंदौर, १९८२—अप्रकाशित

२९२ इना एस० एन०
आदिपुराण का सांस्कृतिक अध्ययन
वाराणसी, १९६५—अप्रकाशित

२९३ झा शक्तिधर
दि कन्ट्रीब्यूशन ऑफ दि ब्राह्मणिकल पौराणिक ट्रेडिशन टू दि जैन पौराणिक ट्रेडिशन
पटना, १९७०—अप्रकाशित

२९४ पाण्डे सूर्यदेव
हरिवंश पुराण का सांस्कृतिक अध्ययन
बिहार, १९६७—अप्रकाशित

२९५ मिश्र देवी प्रसाद
जैन पुराणों का सांस्कृतिक अध्ययन
इलाहाबाद, १९८०—अप्रकाशित (डी०लिट्)

२९६ मिश्रा सुदर्शन
महाकवि पुष्पदंत और उनका महापुराण एक अध्ययन
बिहार, १९८२—अप्रकाशित

२९७ मेहता कु० मंजुला
त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित में महावीर चरित
वाराणसी, १९७७—अप्रकाशित

२९८ मृदुल कुमारी
शान्तिनाथपुराण का समीक्षात्मक अध्ययन
बरेली १९८५—अप्रकाशित

२९९ विश्नोई रीता
पाण्डव पुराण का समीक्षात्मक अध्ययन
बरेली, १९८७—अप्रकाशित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३०० शर्मा मन्जू
त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित : एक अध्ययन
दिल्ली, १९८२—अप्रकाशित

३०१ श्रेयान श्रीमती रत्ना नागेश
ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ महापुराण ऑफ पुष्पदन्त
बम्बई, १९५२—प्रकाशित

जैन नीति, आचार, धर्म, योग

३०२ उपाध्ये आदिनाथ नेमिनाथ
श्री योगबिन्दू देवस परमात्मप्रकाश एण्ड योगसार पमकसुत्तम एण्ड वरांगचरित
बम्बई, १९३९—प्रकाशित (डी० लिट्)

३०३ घट्टसुरेखा
संस्कृत तथा प्राकृत साहित्य में तपश्चरण
भोपाल—अप्रकाशित

३०४ रत्नकरण्ड श्रावकाचार में प्रतिपादित श्रावक धर्म और मोक्ष मार्ग में उसका स्थान
भोपाल, १९८१-८२ (लघु शोध-प्रबन्ध)

३०५ जैन गुलाब चन्द्र
आराधनाया: विश्लेषणात्मकमध्ययनम्
सम्पूर्णानन्द, १९८३—अप्रकाशित (विद्यावारिधि के लिए)

३०६ जैन प्रतिभा
हिन्दू और जैन नैतिक आदर्शों का समालोचनात्मक अध्ययन
रांची, १९८१—अप्रकाशित

३०७ जैन फूलचन्द
मूलाचार का समीक्षात्मक अध्ययन
वाराणसी, १९७७—प्रकाशित

३०८ जैन (मुनि) शिवकुमार
दि डॉक्ट्रेन ऑफ लिब्रेशन इन इण्डियन रिलीजियस विद रेफरेन्स टू जैनिज्म
पटियाला, १९७८—अप्रकाशित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३०९ जैन सनत कुमार
जैन श्रावकाचार का समालोचनात्मक अध्ययन
वाराणसी, १९८०—अप्रकाशित

३१० दिगे अरहद्दास
जैन योग का आलोचनात्मक अध्ययन
वाराणसी, १९७०—प्रकाशित

३११ दुग्गड़ मंगला
जैन बौद्ध योग का तुलनात्मक अध्ययन
वाराणसी, १९८०—प्रकाशित

३१२ भार्गव दयानन्द
जैन एथिक्स
दिल्ली, १९६८—प्रकाशित

३१३ रत्नाकर ए० बी०
जैन धर्म इन रत्नाकरसं वर्क्स
मैसूर, १९८१

३१४ सरन ओमप्रकाश
ए स्टडी ऑफ रिलीजन एण्ड इट्स डिफरेन्ट एक्सप्रेशन्स विद स्पेशल रेफरेन्स टू ब्राह्मण काल बुद्धिस्ट एण्ड जैना रिलीजियस मूवमेन्ट्स
मगध, १९६७ —अप्रकाशित

३१५ सरला
ए कम्पेरिटिव स्टडी ऑफ दि योगशास्त्र वर्क्स इन जैनिज्म एण्ड दि पातंजल योगदर्शन
आगरा, १९६९—अप्रकाशित

३१६ राम अश्विनी कुमार
जैन योग
बिहार, १९७१—अप्रकाशित

३१७ साध्वी मुक्तिप्रभा
जैन योग का तुलनात्मक अध्ययन
विक्रम, १९८३

३१८ सिन्हा बी० एन०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन धर्म में अहिंसा
वाराणसी, १९६८—अप्रकाशित

जैन इतिहास/संस्कृति/कला/पुरातत्व

३१९ अन्नपूर्णम्मा बी
गोम्मटेश्वर
धारवाड़—अप्रकाशित

३२० अलघुकृष्णन पी०
कल्चर एण्ड सोशियल हिस्ट्री एज रिवियल्ड इन सिलापतिकम्
मदुराई, १९७७—अप्रकाशित

३२१ कासलीवाल कस्तूरचन्द
जैन ग्रन्थ भण्डार्स इन राजस्थान
राजस्थान, १९५९—प्रकाशित

३२२ गौड़ तेजसिंह
प्राचीन एवं मध्यकालीन मालवा में जैन धर्म
विक्रम, १९७२—अप्रकाशित

३२३ घन्टा जवाहरलाल
जैनिज्म इन आन्ध्रा एज डिपिक्टिड इन इंस्क्रिपशन्स
नागपुर, १९७९—अप्रकाशित

३२४ जयदेव
बुद्ध पूर्व बिहार के धार्मिक चिन्तक और चिन्तन
बिहार, १९६७—अप्रकाशित

३२५ जैन उत्तम कमल
ओरिजिन एण्ड डवलपमेन्ट ऑफ जैना सेक्ट्स एण्ड स्कूल्स
कुरुक्षेत्र, १९७२—प्रकाशित

३२६ जैन कु० कमला
यशोधर चरित्र की सचित्र पाण्डुलिपियों का अध्ययन
मेरठ, १९७७—अप्रकाशित

३२७ जैन कस्तूरचन्द्र
मध्य प्रदेश के प्राचीन संस्कृत, प्राकृत जैन शिलालेखों का सांस्कृतिक और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समालोचनात्मक अध्ययन
नागपुर, १९७३—अप्रकाशित

३२८ जैन के० सी०
एन्सियेन्ट सिरीज इन राजस्थान (डी०लिट् के लिए)
राजस्थान, १९६४—प्रकाशित

३२९ जैन कैलाशचन्द्र
जैनिज्म इन राजस्थान
राजस्थान, १९५६—प्रकाशित

३३० जैन श्रीमती कोकिला
तीर्थंकर आदिनाथ और उनका मानवीय संस्कृति के उन्नयन में योगदान
राजस्थान, १९८१—अप्रकाशित

३३१ जैन भागचन्द
देवगढ़ की जैन कला का सांस्कृतिक अध्ययन
सागर, १९६९—प्रकाशित

३३२ जैन भागचन्द्र भास्कर
श्रामणिक साहित्य दर्शन और संस्कृति का इतिहास (डी०लिट् के लिए)
नागपुर, १९७९—अप्रकाशित

३३३ जैन एस० बी०
इलस्ट्रेटिड जैना मैन्यूस्क्रिप्ट्स फ्रॉम दिगम्बर भण्डाराज
बम्बई, १९७१

३३४ जैन श्रीमती सुशीला
मालवा में जैन साहित्य का निर्माण तथा जैन साहित्यकारो का योगदान
विक्रम, १९७७—अप्रकाशित

३३५ जोहरापुरकर विद्याधर
भट्टारक सम्प्रदाय
नागपुर, १९५९—प्रकाशित

३३६ झा हितनारायण
दि लिच्छवीज
वाराणसी, १९६४—अप्रकाशित

३३७ तिवारी मारुतिनन्दन प्रसाद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तर भारत में जैन मूर्तिकला
वाराणसी, १९७७—प्रकाशित

३३८ तिवारी विनोद कुमार
राइज एण्ड डिक्लाइन ऑफ जैनिज्म इन बिहार फ्रॉम सिरका ६०० बी०सी० टू २०० एo डी०
मगध, १९८३—अप्रकाशित

३३९ देव शान्ताराम भालचन्द्र
हिस्ट्री ऑफ जैना मोनाचिज्म फ्रॉम इन्सिक्रिप्शन्स एण्ड लिट्रेचर
बम्बई, १९५२—प्रकाशित

३४० देशाई पाण्डुरंगाराय भीमराय
जैनिज्म इन साउथ इण्डिया सम जैना सपिग्राप्स (डी०लिट् के लिए)
धारवाड़, १९५४—प्रकाशित

३४१ दोशो सरयु वी०
इलैस्ट्रेटेड जैना मैन्युस्क्रिप्ट्स फ्रॉम दिगम्बर भण्डाराज
बम्बई, १९७१—अप्रकाशित

३४२ माथुर कु० प्रतिभा
मंदिर स्थापत्य तथा मूर्तिकला के सन्दर्भ में ग्यारसपुर का विशेष अध्ययन
भोपाल, १९८२ (लघु शोध प्रबन्ध)

३४३ मिश्रा के
इन्ट्रोडक्शन एण्ड डवलपमेन्ट ऑफ जैनिज्म इन साउथ इण्डिया
कलकत्ता, १९७३—अप्रकाशित

३४४ मिश्र जोगेन्द्र
अर्लि हिस्ट्री ऑफ वैशाली
पटना, १९५८—प्रकाशित

३४५ राजशेखर एस
अहोले इट्स हिस्ट्री एण्ड मोनूमेण्ट्स
धारवाड़—प्रकाशित

३४६ रे चन्द्र देव
प्राकृत शिलालेखों का आलोचनात्मक अध्ययन
मगध, १९७०—अप्रकाशित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३४७ रोरड़िया हीरा बाई
जैन साहित्य में विदुषी साध्वियों एवं महिलाओं का इतिहास
इंदौर, १९७६—प्रकाशित

३४८ लॉ बी० सी०
इन्डिया एज डेस्क्राईब्ड इन अर्ली टैक्स्ट ऑफ बुद्धिज्म एण्ड जैनिज्म (डी०लिट्)
लखनऊ, १९४१—अप्रकाशित

३४९ वर्मा कुमारी मन्जु
जैन हिस्ट्रियोग्राफी
वाराणसी—अप्रकाशित

३५० शर्मा आई० सी०
तेरा पन्थी सेक्ट ऑफ जैनाज बिलोंगिग टू श्वेताम्बर स्कूल
राजस्थान, १९५९—अप्रकाशित

३५१ श्रीवास्तव उमानाथ
१६वीं तथा १७वीं शती में उत्तर प्रदेश में जैन
पटना—अप्रकाशित

३५२ सत्य प्रकाश
कुमारपाल चालुक्य
आगरा, १९६७—अप्रकाशित

३५३ सिंघई चम्पालाल
मध्यप्रदेश और राजस्थान में भट्टारकों का उद्भव और विकास
विक्रम—अप्रकाशित

३५४ सिंघई पी० सी०
उत्तरी म० प्र० (सागर सम्भाग) की जैन कला का समीक्षात्मक अध्ययन
सागर, १९८०—अप्रकाशित

३५५ सिंह रामभूषण प्रसाद
जैनिज्म इन अर्लि मिडाईवल कर्णाटक
पटना, १९७२—अप्रकाशित

३५६ सिंह हरिहर
पश्चिम भारत के जैन मन्दिर
वाराणसी, १९७६—प्रकाशित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३५७ शेट्टर एस०
श्रवण वेलगोला एण्ड इट्स मोनुमेन्ट्स
धारवाड़—प्रकाशित

जैन एवं बौद्ध दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन

३५८ आप्टे केशववामन
क्रिटिसिज्म आॅफ बुद्धिज्म एण्ड जैनिज्म इन ब्रह्मसूत्र
बम्बई, १९६४—प्रकाशित

३५९ जैन रमेश चन्द
बौद्ध दर्शन की शास्त्रीय समीक्षा संस्कृत जैन ग्रन्थों के आधार पर
बरेली, १९८१ - अप्रकाशित (डी०लिट्)

३६० जैन सागरमल
जैन, बौद्ध तथा गीता के आचार दर्शन का तुलनात्मक एवं समालोचनात्मक अध्ययन
ग्वालियर, १९७१—प्रकाशित

३६१ त्रिपाठी रामप्रसाद
अभिधर्मकोश और तत्वार्थसूत्र का तुलनात्मक अध्ययन
वाराणसी, १९७४—अप्रकाशित

३६२ प्रसाद नन्दकिशोर
ए कम्पेरिटिव स्टडी आॅफ बुद्धिष्ट विनय एण्ड जैनाचार
बिहार, १९६५—प्रकाशित

३६३ सिंह अरुण प्रताप
जैन एवं बौद्ध दर्शनों में भिक्षुकी संघ की उत्पत्ति, विकास एवं स्थिति
वाराणसी, १९८३

३६४ सोलोमन ईस्थर अब्राहम
अविद्या एण्ड दि कगनेट कन्सेप्ट्स इन वैदिक बुद्धिष्ट एण्ड जैन दर्शन्स
बम्बई, १९५४—अप्रकाशित

जैन एवं वैदिक दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन

३६५ कौशल शक्तिबाला कु०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सांख्य दर्शन की शास्त्रीय समीक्षा संस्कृत जैन ग्रन्थों के आधार पर
बरेली, १९८६—अप्रकाशित

३६६ जेटली जे० एस०
ए क्रिटिकल सर्वे ऑफ दि कन्ट्रीब्यूशन ऑफ दि जैना राइटर्स टू न्यायवैशेषिक लिट्रेचर विद ए क्रिटिकल एडिशन ऑफ न्याय कन्दली ऑफ श्रीधराचार्य
बम्बई, १९५६—अप्रकाशित

३६७ झवेरी इन्दुकाला एच०
दि सांख्य योग एण्ड जैना थ्योरिज ऑफ प्रमाण
गुजरात, १९५३—अप्रकाशित

३६८ झा श्यामनन्दन
शंकर तथा कुन्दकुन्द के दार्शनिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन
विक्रम, १९७६—अप्रकाशित

३६९ पालीवाल के० एस०
जैन और मीमांसा दर्शनों के कर्म सिद्धान्त का तुलनात्मक अध्ययन
जबलपुर, १९७२—अप्रकाशित

३७० वालि कौशल्या
दि कन्सेप्शन ऑफ अहिंसा इन इण्डियन थाट टू संस्कृत सोर्सेज वैदिक, जैन एण्ड बुद्धिष्ट
इलाहाबाद, १९६०—अप्रकाशित

३७१ शर्मा ओम प्रकाश
ए स्टडी ऑफ रिलीजन एण्ड इट्स डिफरेन्ट एक्सप्रेशन्स विद स्पेशियल रेफरेन्स टू ब्राह्मणकालीन, बुद्धिष्ट एण्ड जैना रिलिजियस मूवमेन्ट्स
मगध, २९६७—प्रकाशित

३७२ शर्मा रामकिशोर
सांख्य तथा जैन तत्व ज्ञान एवं आचार का तुलनात्मक अध्ययन
आगरा, १९७४—प्रकाशित

३७३ शर्मा सेवा कुमारी
ए कम्पेरिटिव एण्ड क्रिटिकल स्टडी ऑफ दि एथिक्स ऑफ बुद्धिज्म, जैनिज्म एण्ड भगवद्गीता
बिहार, १९७६—अप्रकाशित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन रामकथा साहित्य

३७४. अग्रवाल उषा
ए कम्पेरिटिव स्टडी ऑफ दि स्टोरी ऑफ राम एज प्रेजेन्टेड इन जैना संस्कृत-प्राकृत एण्ड अपभ्रंश लिट्रेचर
मेरठ, १९७८—अप्रकाशित

३७५ उपाध्याय प्रभाकर महादेव
ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ दि पउमचरियम् ऑफ विमलसूरि
बम्बई, १९६२—अप्रकाशित

३७६ उपाध्याय संकटा प्रसाद
महाकवि स्वयम्भू
आगरा, १९६५—प्रकाशित

३७७ कुलकर्णी वामन महादेव
दि स्टोरी ऑफ राम इन जैना लिट्रेचर एज प्रेजेन्टेड वाई श्वेताम्बर एण्ड दिगम्वर इन द प्राकृत, संस्कृत एण्ड अपभ्रंश लेंग्वेजेज
बम्वई, १९५२—प्रकाशित

३७८ गर्ग विजय (श्रीमती)
जैन आचार्य गुणभद्रकृत उत्तरपुराण संस्कृत ;एवं तुलसीकृत रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन
मेरठ, १९७३—अप्रकाशित

३७९ गुप्ता रामनिवास
पउमचरिउ और उसका उत्तरकालीन हिन्दी चरित काव्य पर प्रभाव
रोहतक, १९७९—अप्रकाशित

३८० चन्द्रा के. आर.
ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ पउमचरियम् एण्ड अदर रिलेटेड टॉपिक
बिहार, १९६२—अप्रकाशित

३८१ जैन अक्षय कुमार
जैन साहित्य में रामकथा
इन्दौर—अप्रकाशित

३८२ जैन कल्याण चन्द्र
हिन्दी में राम विषयक जैन साहित्य
आगरा—अप्रकाशित

३८३ जैन गुलाब चन्द्र
पद्म पुराण एक अध्ययन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजस्थान, १९८५—अप्रकाशित

३८४ जैन महेन्द्र कुमार

रविषेणाचार्यकृत पद्मपुराण का काव्यात्मक तथा सांस्कृतिक अध्ययन
मगध, १९७२—अप्रकाशित

३८५ जैन श्रीमती विद्यावती

महाकवि सिंह और उनका पज्जुणचरिउ
मगध, १९८१—अप्रकाशित

३८६ जैन शिखर चन्द

पद्मपुराण तथा रविशेणाचार्य कृत पद्मचरित का तुलनात्मक अध्ययन
आगरा—अप्रकाशित

३८७ दीक्षित ओमप्रकाश

जैन कवि स्वयम्भूदेवकृत पउमचरिउ (अपभ्रंश) एवं तुलसीकृत रामचरित-मानस का अध्ययन
आगरा, १९६२—प्रकाशित

३८८ भयानी हरिवल्लभ चुन्निरवाल

दि पउमचरिउ ऑफ स्वयंभूदेव (विद्याधर खण्ड)
बम्बई, १९५२—प्रकाशित

३८९ मदनलाल

हिन्दी रामकथा साहित्य के प्रमुख पात्रों का संस्कृत प्राकृत एवं अपभ्रंश रामकथा साहित्य के पात्रों के साथ तुलनात्मक अध्ययन
पंजाब, १९७५—अप्रकाशित

३९० मलिक महिषी (श्रीमती)

पुष्पदन्त का रामकाव्य और कृष्णकाव्य : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
इन्दौर, १९७६

३९१ वर्मा सरोज

पद्मपुराण और वाल्मीकि रामायण का तुलनात्मक अध्ययन
बरेली, १९८७

३९२ श्रीमती वीना कुमारी

जैन संस्कृत साहित्य में रामकथा
दिल्ली, १९८३—अप्रकाशित

३९३ शर्मा छोटेलाल

प्राकृत रामकाव्य परम्परा
राजस्थान, १९७०—अप्रकाशित (डी०लिट्)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३९४ शर्मा देवनारायण
पउमचरिउ और रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन
बिहार, १९६६—प्रकाशित

३९५ शर्मा योगेन्द्रनाथ "अरुण"
स्वयम्भू एवं तुलसी के नारीपात्र : तुलनात्मक अध्ययन
गुरुकुल कांगड़ी, १९७३—प्रकाशित

३९६ शर्मा सीताराम
जैन परम्परा में रामकथा
राजस्थान, १९७६—अप्रकाशित

३९७ शर्मा सुरेन्द्र कुमार
स्वयम्भू के पउमचरिउ के उपाख्यानों का रामायण एवं रामचरितमानस के साथ तुलनात्मक अध्ययन
मेरठ, १९७६

३९८ शाह एस. के.
जैन परम्परा का रामकथा साहित्य : एक अनुशीलन
पूना, १९७१

३९९ शुक्ल रमाकान्त
जैन आचार्य जिनसेनकृत पद्मपुराण संस्कृत एवं तुलसीकृत रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन
आगरा, १९६७—प्रकाशित

४०० संगमनाथ
जैन रामायण ऑफ अभिनव पम्प
धारवाड़—प्रकाशित

४०१ सक्सेना सीताराम
दि इन्फ्लूयेन्स ऑफ दि आगमाज ऑन दि रामचरितमानस
राजस्थान, १९६५—अप्रकाशित

४०२ साठे गजानन नरसिंह
स्वयम्भू के पउमचरिउ तथा तुलसी के रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन
बम्बई, १९६६

जैन विज्ञान गणित

४०३ अग्रवाल मुकुटबिहारीलाल
ग.णि त और ज्योतिष के विकास में जैनाचार्यों का योगदान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आगरा, १९७३—अप्रकाशित

४०४ गर्ग हरिश्चन्द्र
जैन गणित
आगरा—अप्रकाशित

४०५ जैन अनुपम
गणित के विकास में जैनाचार्यों का योगदान
मेरठ, १९८०—अप्रकाशित (एम० फिल्)

४०६ जैन प्रकाशचन्द्र
जैन सृष्टि विद्या एवं पौराणिक सृष्टि विद्या का विकास : वेद के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन
जबलपुर, १९७१—प्रकाशित

४०७ साध्वी ललिता कु०
भारतीय दर्शन में परमाणुवाद
इंदौर, १९७७—अप्रकाशित

व्यक्तित्व-कृतित्व

४०८ उपाध्ये आदिनाथ नेमिनाथ
एन एसे ऑन कुन्दकुन्द हिज डेट प्रवचनसार एण्ड अदर वर्क्स विद इंगलिश ट्रांसलेशन ऑफ प्रवचनसार
बम्बई, १९३९—प्रकाशित

४०९ चौहान ब्रजेन्द्रपालसिंह
महाकवि भूधरदास : व्यक्तित्व एवं कृतित्व
आगरा, १९७२—अप्रकाशित

४१० जैन उत्तमचन्द्र
आचार्य अमृतचन्द्र : व्यक्तित्व एवं कृतित्व
विक्रम, १९८३

४११ जैन उषा (श्रीमती)
भैया भगवतीदास और उनका साहित्य
आगरा, १९७६

४१२ जैन कपूर चन्द
पं० आशाधर व्यक्तित्व एवं कृतित्व
आगरा—अप्रकाशित

४१३ जैन विहारीलाल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भट्टारक सकलकीर्ति : एक अध्ययन
उदयपुर, १९७५—अप्रकाशित

४१४ जैन रवीन्द्र कुमार
कविवर बनारसीदास जीवन और कृतित्व
आगरा, १९५९—प्रकाशित

४१५ जैन राजकुमार
आचार्य पुष्पदन्त : एक अध्ययन
आगरा, १९५९—अप्रकाशित

४१६ जैन सावित्री
श्री तारण स्वामी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व
सागर, १९८४—अप्रकाशित

४१७ टंडन किरण
श्री ज्ञानसागर मुनि का जीवन एवं उनके संस्कृत कार्यों का साहित्यिक मूल्यांकन
नैनीताल, १९७८—प्रकाशित

४१८ नरसिंहाचार्यलु बी०
धर्मसूरि एण्ड हिज वर्क्स, ए क्रिटिकल स्टडी
उस्मानिया, १९८२

४१९ बोरडिया हीराबाई
जैन विदुषी तपस्विनियों का इतिहास
इंदौर, १९७६—अप्रकाशित

४२० भारिल्ल हुकुमचन्द्र
पंडित टोडरमल-व्यक्तित्व और कृतित्व
इंदौर, १९७२—प्रकाशित

४२१ माथुर एम०एम० स्वरूप
कुशललाभ और उनका साहित्य
राजस्थान, १९७४—प्रकाशित

४२२ मिश्र त्रिगुणानन्द
क्रिटिकल स्टडी ऑफ महाप्राज्ञ मारविजय एण्ड मदानन्दम्
बिहार, १९८६

४२३ रामा स्वामी एम०पी०आर०एम०
ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ नकीरर एण्ड हिज वर्क्स
का.ीकट, १९८२—अप्रकाशित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४२४ रावका प्रेमचन्द
ब्रह्म जिनदास : व्यक्तित्व एवं कृतित्व
राजस्थान, १९७८—प्रकाशित

४२५ वैद सुमेरमल
आचार्य भिक्षु (भिखण जी) व्यक्तित्व और कृतित्व
भागलपुर, १९८१—अप्रकाशित

४२६ शर्मा ईश्वरानन्द
महाकवि जिनहर्ष : एक अनुशीलन
राजस्थान, १९६९

४२७ शास्त्री मूलचन्द
कविवर बुधजन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व
विक्रम, १९८१—प्रकाशित

४२८ सेठ सूर्य भोगीलाल
श्रीमद रायचन्द्र : ए स्टडी
बम्बई, १९६६—अप्रकाशित

४२९ हाण्डि एस० सी०
नागचन्द्र एण्ड हिज वर्क्स
धारवाड़—अप्रकाशित

समाज शास्त्र

४३० जैन कोमल चन्द
जैन और बौद्ध आगमों में नारी
वाराणसी, १९६७—प्रकाशित

४३१ जैन जगदीश चन्द्र
लाईफ इन एन्सियेन्ट इण्डिया एज डिपेक्टेड इन जैन कैनन
बम्बई, १९४४--प्रकाशित

४३२ जैन सन्ध्या
गंजबासौदा के जैन समाज में विवाह : समाजशास्त्रीय अध्ययन
भोपाल, १९८५—अप्रकाशित (लघु शोध प्रवन्ध)

४३३ जैन सुशीला
सोशियोलाजी ऑफ जैन टेम्पल गोअरस
राजस्थान, १९६९—अप्रकाशित (लघु शोध प्रबन्ध)

४३४ मलैया श्रीमती आशा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन पुराणों में नारी
सागर

४३५ संघवे विलास आदिनाथ
जैना कम्युनिटी : ए सोशियल सर्वे
बम्बई, १९५०—प्रकाशित

४३६ सक्सेना कमलेश कुमारी
वुमन इन जैना लिट्रेचर एण्ड आर्ट (५०० बीसी टू १२०० एडी)
आगरा, १९७३—अप्रकाशित

अर्थशास्त्र

४३७ जैन डी०सी०
इकोनामिक लाइफ इन एन्सियेन्ट इण्डिया एज डिडिक्टेड इन जैन केनोनिकल लिट्रेचर
मगध, १९७८—प्रकाशित

४३८ जैन सुपार्श्वकुमार
भारतीय आर्थिक विचारधारा में जैन विचारकों का योगदान एवं प्रभाव (६०० बीसी–१५०० एडी)
मेरठ, १९८२—अप्रकाशित

४३९ माण्डावत श्यामलाल
इकोनामिक आईडिया इन जैनिज्म
उदयपुर, १९७२—अप्रकाशित

शिक्षा शास्त्र

४४० जैन कैलाशचन्द्र
दी एजूकेशनल फिलासफी आफ लार्ड महावीर विद रिलीवेन्स टू माडर्न इण्डिया
पंजाब, १९८२

४४१ शर्मा निशानन्द
जैन वाङ्मय में शिक्षा के तत्व
मगध, १९७६—अप्रकाशित

राजनीति

४४२ चौधरी गुलाब चन्द्र
पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ नार्दन इण्डिया फ्रॉम जैन सोर्सेज
वाराणसी, १९५४—प्रकाशित

४४३ जैन चमन लाल
पो.लटिकल फिलोसफी ऑफ आचार्य हेमचन्द्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आगरा, १९७३—अप्रकाशित

४४४ जैन ज्योतिप्रसाद
स्टडी इन दि जैना सोर्सेज ऑफ दि हिस्ट्री ऑफ एन्सियेन्ट इण्डिया (१०० बीसी टू ३०० एडी)
आगरा, १९५६—प्रकाशित

४४५ जैन फेरुमल
सोमदेव एक राजनीतिक विचारक
आगरा, १९६४—अप्रकाशित

४४६ जैन विजयलक्ष्मी
जैन साहित्य में निर्दिष्ट राजनैतिक सिद्धान्त (७वीं से ११वीं शती तक)
आगरा, १९७८—अप्रकाशित

४४७ जैन श्यामसिंह
नेचर ऑफ पोलिटी इन जैन लिट्रेचर
लखनऊ, १९५४—अप्रकाशित

४४८ मोहरिल्ल बी०वी०
ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ दि मोनास्टिक एण्ड एसेटिक लाईफ इन जैनिज्म टूगेदर विद सोशल एण्ड पोलिटिकल लाईफ बेस्ट अपोन नायधम्मकहाओ
नागपुर, १९७२—अप्रकाशित

४४९ सिंह फतेहसिंह
बौद्ध तथा जैन साहित्य में वर्णित राजतन्त्र का तुलनात्मक अध्ययन
वाराणसी, १९७४—अप्रकाशित

मनोविज्ञान/भूगोल

४५० कालघटगी जवनु गुण्डूप्पा
सम प्राब्लम्स ऑफ जैन साइक्लोजी
धारवाड़, १९५९—प्रकाशित

४५१ मेहता मोहनलाल
साइक्लोजिकल एनालिसिस आव जैना कर्म फिलासफी
वाराणसी, १९५५—प्रकाशित

४५२ संकटाप्रसाद
एंसिएन्ट ज्योग्राफी ऑफ इण्डिया फ्रॉम जैना सोर्सेज (६०० एडी टू १२०० एडी) विद स्पेशल रेफरेन्स टू जैन पुराणाज
वाराणसी, १९७९—अप्रकाशित

●●●

4658

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

डॉ. कपूर चन्द जैन

जन्म : 1954 ई.
वरधुवाँ (दतिया) मध्य प्रदेश

शिक्षा : एम.ए. (B.H U.) 1977
पी एच.डी. (बरेली) 1985
सिद्धान्तशास्त्री (बम्बई) 1975

अभिरुचि : अध्ययन-अध्यापन, लेखन, फोटोग्राफी, समीक्षा एवं यायावरीय वृत्ति अनेक साहित्यिक, सामाजिक संस्थाओं से सम्बद्ध

प्रकाशन : 'पुरुदेव चम्पू का आलोचनात्मक परिशीलन पुस्तक तथा लगभग 20 शोध निबन्ध स्तरीय पत्र/पत्रिकाओं में प्रकाशित

पुरस्कार : 5001/- के महावीर पुरस्कार से सम्मानित

सम्प्रति : अध्यक्ष संस्कृत विभाग
श्री कुन्दकुन्द जैन महाविद्यालय
खतौली-251201 (उ.प्र.)

मूल्य : 50/–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi